सृजन मञ्जूषा

(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष-३ | अंक-१४ | Title Code - CHHMUL00048 | वि.सं. २०८२ | सितम्बर-अक्टूबर २०२५

कुटुम्ब प्रबोधन विशेषांक

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्रकाशक :

सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़

आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर - ४९२०१० (छ.ग.)

बदलते बस्तर की नई तस्वीर

327 गांवों में
नियद नेल्ला नार योजना
से तीव्र विकास

350 स्कूलों
में दोबारा शुरू हुई पढ़ाई

278 किलोमीटर
नई सड़कों का निर्माण

11 वृहद
पुलों का निर्माण

140 किलोमीटर
नई रेल लाइन विस्तार की
स्वीकृति

1000 नए
मोबाइल टावरों की स्थापना

5,500 से
अधिक घरों का विद्युतीकरण

40,000 से
अधिक युवाओं को
मुख्यमंत्री कौशल विकास
योजना अंतर्गत रोजगार अवसर

3202 नए
बस्तर फाइटर्स के पदों का सृजन

5,500 प्रति
मानक बोरा की दर से
तेंदूपत्ता का भुगतान

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

RO No. - 13208/3

सुशासन से समृद्धि की ओर

Visit us : ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

सृजन मञ्जूषा

कुटुम्ब प्रबोधन विशेषांक
(द्विमासिक पत्रिका)

वर्ष - ३ अंक -१४ Title Code - CHHMUL00048 विक्रम संवत् २०८२ सितम्बर-अक्टू. २०२५

संरक्षक
श्री सत्यनारायण अग्रवाल
(वरिष्ठ सदस्य, विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री अखिलेश मिश्र
संगठन मंत्री
(विद्या भारती मध्य क्षेत्र)
श्री रामभरोसा सोनी
(अध्यक्ष, सरस्वती शिक्षा संस्थान (छ.ग.)
श्री लक्ष्मण राव मगर
(प्रादेशिक सचिव, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

परामर्शदाता
डॉ. देवनारायण साहू
(संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ.ग.)

संपादक
उदय रावले

संपादक मंडल
अशोक कुमार देवांगन
शिरीष दाते

कम्पोजिंग – कौशल साहू, मो.9753211816
मुद्रक – स्वास्तिक प्रिंटरी, पंचमुखी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास न्यू चंगोराभाठा, रायपुर, मो. – 9826446695

प्रकाशक
सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़
आयुर्वेदिक कालेज के पीछे, सरस्वती विहार, रायपुर ४९२०१० (छ.ग.)
दूरभाष : ०७७१-२२६२७७०,
२२६२३९३ २२६२३४२
web side : www.vidyabharticg.org
e-mail:vidyabharticg@gmail.com
e-mail-srijanmanjusha@gmail.com

मूल्य – 40 रुपये प्रति, 240/– वार्षिक

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	श्री उदय रावले	02
2.	भारतीय संस्कृति में कुटुंब व्यवस्था कल और आज	गिरीश पंकज	03
3.	भारतीय संस्कृति में कुटुंब व्यवस्था	उत्कर्ष चतुर्वेदी	05
4.	बिखरती कुटुंब व्यवस्था का मानव जीवन पर प्रभाव	डॉ. मंजिरी बक्षी	08
5.	संयुक्त परिवार – हमारी आन, बान और शान	रामेश्वर गुप्ता	11
6.	वृद्धजनों की कुटुम्ब व्यवस्था में भूमिका	विजय बक्षी	12
7.	बिखरती कुटुम्ब व्यवस्था का मानव जीवन पर प्रभाव और समाधान	शताब्दी सुबोध पाण्डे	14
8.	पं. दीनदयाल उपाध्याय	रेवाराम सोनी	17
9.	शिक्षक समाज का दर्पण	देवेश सोनी	19
10.	रक्षा बंधन	एम.एल. नत्थानी	22
11.	गरीब के सपना	दिलीप जायसवाल	22
12.	कविता –	मीना रावले	23
13.	जिंदगी की आपाधापी	एम.एल. नत्थानी	23
14.	हिन्दी दिवस	सरला कश्यप	24
15.	उत्तराखण्ड यात्रा भाग–1	रश्मि रामेश्वर गुप्ता	25
16.	समाचार		26

पत्रिका में छपे हुए लेख लेखकों के अपने विचार हैं।

सम्पादकीय

प्रति,

पाठकगण, जय जोहार,

ये दारी के अंक हा कुटुम्ब प्रबोधन अंक हरय, आज के समय में परिवार छोटे होवत जात हे, दाई-ददा मन बूढ़ाथे तब ओखर देखइया, सेवा करइया कउनो लैका ओखर करा नई रहाय, अउ सियान मन ला अपन करा रखे बर भी तैयार नही रहाय, अइसन समय में आज के जवान पीढ़ी ला कुटुम्ब के का महत्व हे, संग रेहेले का फायदा हे, माँ-बाप के सेवा करना काबर जरूरी है, मानवीय भावना- सेवा भावना जगाना जरूरी हे, ये सती ये विशेषांक में विद्वान लेखक मन हा अपन रचना (कविता या लेख) ला छापे बर दे हावय, आप पढ़हू त बहुत अकन शिक्षा प्रद बात आप मन ला मिलही, संस्कृत में एक सुभाषित हे- सर्वतीर्थ मयी माता, सर्वदेवो मयार्पिता।

मातरं-पितरं तस्मात्, सर्वयत्लेन पूजयेत्। हमर माँ के चरण मे ही दुनिया के सब तीरथ हावय, सब देवता माने हमर पिता हरय, एखर सति सब प्रकार से जतन करके अपन माता-पिता ला पूजव, अइसे कहना हे, माँ से बढ़कर तो दुनिया में कोई नही है। भगवान ला जब धरती में रेहे के मन करीस हे तो वो हा माँ के रूप में हमर संग रेहे बर आगे हे। ओ हा हमर मन के बात ला समझथे। जब हमन ला कोई भाषा नहीं आवत रिहीस हे तभ्भो हमला कब भूख लगे हे, हमर तबियत में का गड़बड़ी होगे हे, सबला समझ, हमर अच्छा तरह से जतन करने वाला, हमर मल-मूत्र ला सहि के हमन ला साफ-सुथरा रखइया, अपन से ज्यादा हमर ध्यान रखइया, हमर बर रात के नींद अऊ दिन के चैन ला छोड़ने वाला हमर दाई हरय, ओखर उपकार के कउनो बदला नही हो सके, कोई जनम में हमन ला ओखर माँ बने के मौका लगही तभे ओखर ऋण ला उतार सकथन। अतेक सेवा करे के बाद भी यदि लइका हा ओला नही पूछही तभो ले ओखर प्रति अच्छा ही सोचने वाला माँ हरय, पिता हा सांत रहिके हमर पालन-पोषण में हमर माँ के साथ देथे। ओखर वर्णन भी करना कठिन हे काबर ओखर मन ला पढ़ना कठीन हे, ओखर मन अउ कृति दोनों अलग-अलग रिहीथे, प्रकट में कठोर होके भी वो हा अंदर से हमर भला, प्रगति, सुख बर काम करने वाला हरय, ओखर उपकार दिखय नही, ओला महसूस करना पड़थे, ओखर नही रहायले ओखर महत्व समझ में आथे, लइका हा जो कुछ अपन जीवन में स्थान पाथे ओखर नींव में पिता के पसीना अउ माँ के ममता हा मजबूती देथे, ओमन के उपकार के कोई मोल नहीं है पूरा जिंदगी भी लगा देबो तो भी ओखर कोई अंस भी नहीं पा सकन, नाना-नानी, दादा-दादी के संग नाती-पोता के संबंध समझना ओखर रेहे ले भावनात्मक विकास अउ संस्कार सहज प्राप्त होथे। छोटे परिवार में लइका के अनुसासनहीन होना, चिड़चिड़ा होना ऐसी अनेक भावना दादा-दादी, नाना-नानी के नई होवेसे जागृत होवत हे, जेन लइका इंकर प्यार में बढ़ेहे ओमा संस्कार, सदाचार, सद्वृत्ती, सद्गुण विकास सहज होके भावनात्मक रूप से मजबूत लइका बाढ़ते, आज नशाखोरी, आत्महत्या, उच्छृंखलता इन वृद्ध जन के प्यार के अभाव से उत्पन्न हताशा, निराशा, के सति बाढ़त जात हे, हमन ला गुणवान, स्वस्थ ऐसे पीढ़ी के निर्माण बर येमनला संग रखना होही। मन-बुद्धि-आत्मा तीनों से स्वस्थ ऐसे व्यक्ति के निर्माण में कुटुम्ब व्यवस्था के योगदान ला समझना होही। ओखर पालन करना होही हर व्यवस्था में गुण दोष हावय, पर छोटे परिवार से नई पीढ़ी विकास में जौन कीमत हमला देना पड़त हे ओखर तुलना में दादा-दादी या नाना-नानी सहित परिवार ला कुटुम्ब कहिथन ओमा कम घातक तकलीफ होवत हे, आज के पीढ़ी ये बात ला समझय, अपन संग अपन माता-पिता ला रखय तभे ये समस्या के समाधान हो सकथे।

बाकी सम-सामायिक विषयक ला संजो के ये अंक हा आप मनबर बहुत सारा पठनीय सामग्री ले के आय हे, आप मन ला भाही। आपके प्रतिक्रिया थे इंतजार में

उदय रावले
संपादक
सृजन मञ्जूषा

भारतीय संस्कृति में कुटुंब व्यवस्था कल और आज- बिखरता जा रहा समाज

– गिरीश पंकज

साहित्यकार, रायपुर छ.ग.

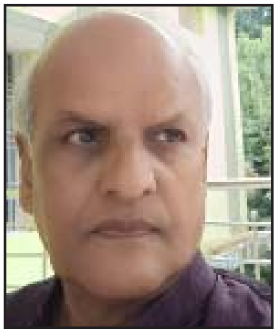

कुटुंब या परिवार। यह छोटा–मोटा शब्द नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा का अभिन्न हिस्सा है। हमने तो कुटुंब को और व्यापक अर्थ में लिया है, इसलिए हमारे प्राचीनतम ग्रंथों में 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा है. पूरी वसुधा अर्थात धरती एक परिवार है। यह और बात है कि समय के साथ चलते हुए अब भारतीय परिवार बिखरने लगे हैं। वरना एक दौर था, जब एक परिवार में सारे भाई एक साथ रहते थे। सबका खाना एक ही चूल्हे पर बनता था। व्यवस्था की दृष्टि से सबके कमरे अलग–अलग होते थे। लेकिन भोजन के समय सब एक साथ बैठकर खाना खाते थे। कोई भी त्यौहार हो, मिल–जुल कर मनाया करते थे। परिवार के बूढ़े मुखिया का आदेश हर कोई मानता था। घर परिवार के सदस्य अपने बुजुर्गों को देवता की तरह पूजते थे ।इसी भाव के प्रबोधन के लिए मैंने एक गीत लिखा है, जो वृद्धजनों की सेवा में, तन–मन–धन अर्पण करता है।

वह करे न पूजा–पाठ भले, सीधे प्रभु–दर्शन करता है।
जिसने इस दुनिया में आकर,गर वृद्धों का सम्मान किया ।
उसने अपने लघु जीवन का,प्रतिपल जैसे उत्थान किया।
उसका वंदन जो बूढों का,बढ़कर अभिनंदन करता है ।
न पद पैसा रह जाता है,यह तो आता औ जाता है ।
जो सेवा करता है सबकी,वह व्यक्ति परमपद पाता है ।
वह मानव नहीं महामानव,जीवन को उपवन करता है।
यह तन है सुंदर–स्वस्थ मगर,इक दिन इसको ढल जाना है।
जैसे बगिया के सुमनों को भी, शाम ढले मुरझाना है।
वह धन्य है जो इन फूलों का, बढ़कर संरक्षण करता है।
ये वृद्ध नहीं, इक बरगद हैं,जो शीतल–छाँव लुटाते हैं।
खुद झुलस गए अकसर लेकिन,जलने से हमें बचाते हैं।
यह काम हमेशा बढ़कर के,धरती का भगवन करता है।

लेकिन आज कितनी बुरी हालत हो गई है कि अब एकल परिवार हो गए हैं। बुजुर्ग या वृद्ध लोग कुटुंब से दूर होते जा रहे हैं। या किए जा रहे हैं। अब कुटुंब यानी सिर्फ पति–पत्नी और उनके एक–दो बच्चे। सगे भाई भी अब अलग–अलग रहते हैं। आपसी प्रेम भी खत्म होता जा रहा है। अगर भाई–भाई किसी विवशता के कारण अलग भी रहते हैं, तो आपसी प्रेमभाव खत्म नहीं होना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि अब यह प्रेम भी खत्म हो रहा है। आपस में हिंसा हो रही है। धन या जमीन को लेकर आपस में कानूनी लड़ाई लड़ी जा रही है। कुछ बच्चे बूढ़े माता–पिता को वृद्ध आश्रम में भेज देते हैं। विदेश में कभी ऐसा हुआ करता था। आज भी हो रहा है, लेकिन भारत देश में, इस सनातन राष्ट्र में, हमने कभी इस बात की कल्पना नहीं की थी कि यहां भी वृद्ध आश्रम खुलेंगे। मेरा अपना मानना रहा है कि

जब बुजुर्गों की दुआएँ साथ रहती हैं,
यूँ लगे शीतल हवाएँ साथ रहती हैं।

लेकिन अब ऐसी बातों पर कौन विचार करता है। मगर जो करता है, वही इस देश को प्यार करने वाला है। हमारे देश में तो कभी केवल आश्रम हुआ करते थे। ऋषियों के आश्रम। वहाँ गुरुकुल हुआ करते थे। जहां सभी तरह के बच्चे आपस में मिलजुल कर पढ़ाई किया करते थे। ऊँच–नीच का कोई भाव नहीं हुआ करता था। जहां श्री कृष्ण पढ़ा करते थे, तो वहां सुदामा भी पढ़ा करते थे। ऐसा महान देश था हमारा। लेकिन जब से कुटुंब वाली मानसिकता से समाज दूर होता जा रहा है, अनेक बुराइयां समाज में बढ़ती जा रही हैं। इस बुराई को रोकना ही अब भारतीयता को बचाए रखना है।

कुटुंब या परिवार को बचाए रखना समाज को बचाए रखना है। अपनी संस्कृति को बचाए रखना है। अपनी परंपरा को बचाए रखना है। अपने देश को बचाए रखना है। उस देश को, जिसके बारे में कहा गया कि वह विश्व गुरु रहा है। गुरु वही होता है, जो ज्ञान देता है। एक समय ऐसा था, जब विश्व भर को भारत ने ज्ञान बांटा। यह देश ज्ञान का बड़ा केंद्र हुआ

करता था। दुनिया भर के लोग नालंदा और तक्षशिला में आकर ज्ञान अर्जन किया करते थे, लेकिन एक ऐसा दौर भी आया जब ज्ञान पुराने वैभव खंडित कर दिए गए। उसके बाद से धीरे-धीरे भारत के लोग अपने आप को भूलने लगे। जो समाज अपने अतीत को भूल जाता है, वह बेहतर भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता। पुरातन मूल्यों को लेकर नए जमाने की ओर बढ़ना चाहिए। दुख की बात है कि अब इस तरह की सुंदर सोच से समाज का एक बड़ा वर्ग दूर होता जा रहा है। घर परिवार में रहते हुए एक बच्चा संस्कार सीखता है। उदारता सीखता है। दानशीलता सीखता है। अपनापन सीखता है। बड़ों का मान-सम्मान करना सीखता है। छोटों के प्रति स्नेह सीखता है। परिवार अपने आप में शिक्षा का बड़ा केंद्र है। वहां स्कूल की तरह कोई पाठ नहीं पढ़ाया जाता, लेकिन वहां जो कुछ घटित होता रहता है, उससे बच्चा अपने आप बहुत कुछ सीखने लगता है। जैसा वह बड़ों को देखेगा, वैसा आचरण करेगा।घर का मुखिया अगर झूठ बोलेगा, तो बच्चा झूठ बोलेगा। घर का मुखिया अगर दरवाजे पर आए भिखारी को डांट कर भगाएगा, तो बच्चा भी बड़ा होकर वही करेगा। घर का मुखिया अगर कोई नशा करेगा तो बच्चा भी बड़ा होकर नाश करेगा। घर का मुखिया अगर गाली देने का आदी है तो स्वाभाविक है बच्चा भी गाली देना सीख जाएगा। घर की माता अगर फैशनेबल है, तो बेटी पर उसका असर होगा। माँ जैसी पोशाक पहनेगी, बेटी भी वैसा पहनने लगेगी। कहने का मतलब यह है कि घर के बड़े सदस्यों को देखकर छोटे वैसा आचरण करने लगते हैं। इसलिए बड़े लोगों की यह जिम्मेदारी है कि बच्चों के सामने हमेशा आदर्श प्रस्तुत करते रहें। वह इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि बच्चे उन्हें देखते रहते हैं इसलिए माता-पिता को यह अन्य बड़े सदस्यों को बहुत सावधान रहना चाहिए। उनकी लापरवाही बच्चों को बर्बाद कर सकती है। प्राचीन काल में इस बात का ध्यान रखा जाता था। यही कारण रहा कि समाज में संस्कारित लोगों की संख्या अधिक थी। एक घर अगर संस्कारी हो तो पूरा मोहल्ला संस्कारी हो जाता है। पूरा मोहल्ला संस्कारी हो तो पूरा शहर संस्कारी हो सकता है। एक अच्छा घर दूसरे घरों के लिए प्रेरणा देने का काम करता है। यह एक मानवीय भावना है। आज भी इस बात का हम सब अनुभव करते हैं। किसी पड़ोसी के घर अगर कोई नई गाड़ी आई तो पड़ोस के घर वाले भी यह सोचने लगते हैं कि हमें भी इसी तरह की एक गाड़ी लेनी चाहिए। एक को देख कर दूसरे ग्रहण करने लगते हैं। पहले जमाने में अगर एक घर में गो पालन हो रहा है, तो स्वाभाविक रूप से दूसरे घर में भी गोपालन होता था। अगर एक घर में दस गायें हैं, तो दूसरे घर का प्रयास होता था कि हमारे पास दो गुनी गायें हों। तभी तो इस देश में दूध-घी की नदियां बहा करती थी। तात्पर्य है कि एक अच्छा परिवार एक अच्छे समाज के निर्माण में अपनी भूमिका अदा कर सकता है। यह इस भारत में होता रहा है। उस महान परंपरा को जिंदा रखने की निरंतर कोशिश होनी चाहिए। हम ज्ञान विज्ञान और तकनीकी तरक्की के दौर में यह न भूल जाएं कि हम कौन थे। हमें अपने गौरवशाली अतीत को याद रखते हुए वर्तमान की इमारत खड़ी करनी है। मगर यह तभी संभव हो पाएगा, जब हम अपने देश से प्यार करें। इस देश की महानता को बचाए रखें। यह कार्य तभी संभव होगा, जब अपने आप में सुधार करेंगे। जब हम बरमूडा पहनकर पूरे शहर में घूमेंगे, फटी हुई जींस पहनकर अपने आप को आधुनिक समझने की भूल करेंगे, जब हम शरीर दिखाने वाले कपड़े पहनकर इतराएंगे, तो स्वाभाविक है कि बच्चे भी ऐसा करना चाहेंगे। तब हम उन्हें रोक नहीं पाएंगे। पहले हमें अपने आप में सुधार लाना होगा, तब दूसरों को सीख देना उचित होता है। बड़े पेड़ लगाएंगे तो बच्चे भी पेड़ लगाएंगे। अगर बड़े अपने घर के पेड़ को काटेंगे,तो बच्चे भी काटेंगे। सार यही है कि अगर एक महान समाज बनाना है, तो बड़ों को अपने आचरण में सुधार लाना होगा। उनका एक-एक व्यवहार एक अच्छे कुटुंब की बुनियाद बनता है। उनका खराब आचरण एक कुटुंब को नष्ट कर देता है। जो इस बात का ध्यान रखते हैं परिवार को बचा लेते हैं। जो नहीं रखते, वे समाज का अहित करते हैं। अब समय आ गया है कि हम बच्चों को कुटुंब की परिभाषा बताएं। एकल परिवार की मानसिकता से उन्हें ऊपर उठाएं। और यह तभी संभव है जब हम वैसा करें। भाई-भाई आपस में मिलजुल कर रहे। घर के हर सदस्य एक-दूसरे से प्यार करें। एक-दूसरे के सुख-दुख में खड़े रहें। यही तो है आदर्श कुटुंब, आदर्श परिवार। पहले घर-परिवार को जोड़े रखने के लिए सुंदर-सुंदर शिक्षाप्रद फिल्में भी बना करती थी। माता-पिता और भाई-बहन के स्नेह संबंधी सुंदर गीतों की रचनाएं होती रही हैं। एक बार फिर हमारे साहित्य को, हमारे सिनेमा को कुटुंब को बचाए रखने के लिए लेखन करना चाहिए। तभी भारतीय संस्कृति बच सकेगी। बच्चों को ज्ञान-विज्ञान के पाठ के साथ-साथ नैतिकता के पाठ भी निरंतर पढ़ाए जाते रहने चाहिए।

⊙⊙

भारतीय संस्कृति में कुटुम्ब व्यवस्था

– **उत्कर्ष चतुर्वेदी**
पूर्व छात्र स.शि.मं.
देवेन्द्र नगर, रायपुर

कुटुम्ब संस्कृत का शब्द है। यह शब्द भारतीय संस्कृति का आधार है। यह भारत में सनातन हिंदू संस्कृति के संस्कारों को सीखने की परम्परा यानी समाज की सबसे छोटी इकाई अर्थात परिवार एवं कुटुम्ब से प्रारम्भ होती है। यह भारतीय सनातन परिवार का सबसे व्यापक रूप भी है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात पृथ्वी ही परिवार है। पृथ्वी तो इंसान, जीव-जन्तु से लेकर प्रकृति तक का घर है। यानी भारतीय संस्कृति में कुटुम्ब आदि भी है और अनंत भी। कुटुम्ब की लघु इकाई परिवार है और दीर्घ इकाई संसार। इस विचार का मर्म धर्म में छुपा है, जो सनातन है।

धर्म सारी सृष्टि के साथ जीना सिखाता है। धर्म आत्मोदय का मार्ग है। धर्म सर्वोदय का मार्ग है। कुटुम्ब भी आत्मोदय से लेकर सर्वोदय तक की अवधारणा है।

महोपनिषद् अध्याय 5 श्लोक 71 में यह इस प्रकार उद्धरित है–

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसां
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थात– यह मेरा है वह पराया है ऐसा विचार या भेदभाव छोटी चेतना वाले व्यक्ति करते हैं। उदार चरित्र के व्यक्ति संपूर्ण विश्व को ही परिवार मानते हैं। निश्चित रूप से कुटुम्ब शब्द भारतीय चिंतन, भारतीय व्यवहार और भारतवंशियों की भावना से जुड़ा शब्द है और ये तीनों मिलकर भारत की संस्कृति को परिलक्षित करते हैं।

मर्यादापुरुषोत्तम राम से लेकर चक्रवर्ती सम्राट अशोक महान, गौतम बुद्ध, महावीर तक के आचार-विचार में इसी कुटुम्ब का भाव मिलता है। हनुमान चालीसा में हनुमानजी द्वारा संजीवनी बूटी लाकर मूर्छित लक्ष्मण के प्राण बचाने का प्रसंग है।

रघुपति कीन्ही बहुत बढ़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।

भक्ति, प्रेम, समर्पण और कुटुम्ब की भावना से ओतप्रोत इस चौपाई में प्रभु राम वानर कुल के हनुमानजी की तुलना अपने सबसे प्रिय भाई भरत से करते हैं। भारतीय संस्कृति में कुटुम्ब शब्द की व्यापकता को यह चौपाई अच्छी तरह बताती है। इसमें एक विशेष बात यह भी है कि राम अपना सबसे प्रिय भाई उस भरत को बताते हैं जो उनका सौतेला भाई है।

राम भरत से कितना प्रेम करते थे इसका एक प्रसंग बचपन में किसी धार्मिक पत्रिका शायद कल्याण मासिक में पढ़ा था। बचपन के दिन थे। चारो भाई अन्य अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। शायद कबड्डी जैसा कोई खेल। सदा की भांति राम के साथ लक्ष्मण तथा भरत के साथ शत्रुघ्न थे। राम जी की टीम जीत रही थी। दूसरी तरफ भरत जी अकेले रह गए। भरत जी अपनी टीम के आखिरी खिलाड़ी पाली देने आए। लक्ष्मण जी अपने भाई राम को बोलते है भाई थोड़ा पीछे रहो। लेकिन क्या होता है। जैसे राम को तो खेलना ही नही आता। वह अनाड़ी की भांति खड़े रहते हैं। भरत जी राम को छू कर चले जाते है। भरत जी की टीम जीत जाती है।

भरत जी समझ जाते है कि राम भईया मुझे खेल में भी हारता हुआ नही देख सकते। जब उनको पता लगता है कि राम को वनवास हो गया और उनको राजगद्दी तो वह अपनी मां से कहते हैं कि 'हारहि खेल जितावहीं मोही।' यानी जो खेल में भी जान बूझ कर मुझसे हार कर मुझे जिता देते है वह राम भैया मेरा अहित कैसे कर सकते हैं।

निश्चित रूप से भारत में कुटुम्ब सबसे छोटी इकाई होकर भी अतुलनीय शक्ति वाली है। प्राचीन भारत में तो कुटुंब प्रबोधन के सम्बंध में नियमों को गुरूकुल में सिखाया जाता था। वर्ष 1823 तक भारत में 750,000 गुरूकुल थे। परंतु दुर्भाग्य से विदेशी आक्राताओं द्वारा इन समस्त गुरुकुलों को नष्ट कर दिया

गया और हमारी आने वाली पीढ़ीयां महान भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में सफल नहीं हो सकीं। यह और बात है कि भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करने वाले एक पंक्ति को बार बार जुमले की तरह बोलते सुनाई पड़ते हैं, ''हमारी संस्कृति इतनी कमजोर नहीं कि किसी एक घटना या व्यवहार से खत्म हो जाए।''

सच क्या है? स्थिति किस तरह बदल गई है इसका अंदाजा कीजिए। कुछ वर्ष पहले तक हमारे समाज में भोजन का विशेष व्यवहार था। बहुत संभव है कि हममे से कई लोगों ने अपने दादा-नाना को भोजन ग्रहण करने से पहले पांच कौर को अलग करते देखा होगा। एक कौर गाय माता के लिए, एक कौर कौवे के लिए, एक कौर श्वान के लिए, आदि। तब परमात्मा को भोग लगाया जाता था और फिर भोजन ग्रहण किया जाता था।

परन्तु अब क्या हो रहा है? युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कारों की ओर आकर्षित होती जा रही है। भारत में कहीं परिवार टूट रहे हैं तो कहीं न्यूक्लियर फैमिली (एकल परिवार) का चलन तेजी से चढ़ रहा है। भाई-भाई, पिता-पुत्र, पिता-बेटी, भाई-बहिन के बीच पारिवारिक सम्पत्ति को लेकर कोर्ट-कचहरी में केस हो रहे हैं। सम्बंधों में निजता हावी हो रही है। निजता का भाव किसी के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है। इसलिए सामूहिक जीवन का अभाव दिखाई देता है। पाश्चात्य देशों की तरह शादी के कुछ समय पश्चात ही पति-पत्नी के बीच तलाक के मामले शुरू हो जाते हैं। अब तो बात यहां तक पहुंच गई है कि शादी के कुछ दिनों के अंदर पति या पत्नी के द्वारा किसी एक की हत्या या हत्या की साजिश रचने के मामले सामने आने लगे हैं। यह भारतीय संस्कृति नहीं जिसका आधार कुटुम्ब है।

याद कीजिए दक्षिण के दो राज्यों के जल विवाद की घटना। तब जल बंटवारे के विवाद में सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि हम मिल-बांट कर खाने की संस्कृति को भूल गए हैं। इसके गहरे निहितार्थ हैं। इसका एक आशय यह भी है कि हम कुटुम्ब संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में कुटुम्ब यानी परिवार का आशय केवल पति-पत्नी और उनके बच्चे नहीं। भारतीय संस्कृति में शादी मतलब कोई करार नहीं। भारतीय संस्कृति में परिवार मतलब समाज की वह इकाई है जो हमें मानव बनाते हैं। भारत में सामूहिक जीवन है। समाज में परिवार/गृहस्थ एक केंद्र बिंदु अथवा धुरी के रूप में उपस्थित रहता है। शादी को जन्म-जन्मांतर का रिश्ता माना जाता है। परिवार बढ़ने पर नए सदस्यों का सदैव स्वागत किया जाता है। बुजुर्गों का ध्यान रखा जाता है। भारतीय संस्कृति में परिवार में पशु-पक्षियों को भी शामिल किया गया है। इसलिए, बिल्ली को मौसी, नदी को माता, धरती को माता, गौ को माता, अग्नि को सखा आदि की संज्ञा दी गई।

भारतीय संस्कृति में कुटुम्ब का कार्य बच्चों की देखभाल, माता-पिता की भूमिकाएं परिभाषित करना, यौनिकता को नियंत्रित करना और पीढ़ियों के बीच सम्पत्ति और ज्ञान का हस्तांतरण जैसी बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करना है।

लुईस हेनरी मॉर्गन, एक वकील जिन्होंने मूल अमेरिकी संस्कृतियों का प्रारंभिक मानवशास्त्रीय अध्ययन भी किया था, ने इरोक्वाइस भाषा में परिवार के सदस्यों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त शब्दों का दस्तावेजीकरण किया। सिस्टम्स ऑफ़ कॉन्सैंग्विनिटी एंड एफिनिटी ऑफ़ द ह्यूमन फ़ैमिली (1871) नामक पुस्तक में उन्होंने बताया कि परिवार के सदस्यों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त शब्द, जैसे 'मां' या 'चचेरी बहन', महत्वपूर्ण थे, क्योंकि वे घरों और बड़े समुदाय, दोनों में विशिष्ट परिवार के सदस्यों से जुड़े अधिकारों और जिम्मेदारियों को दर्शाते थे। यह परिवार के सदस्यों के लिए हमारे द्वारा प्रयुक्त उपाधियों में देखा जा सकता है—जैसे पिता या चाची—जो यह वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति परिवार में कैसे फिट बैठता है और साथ ही दूसरों के प्रति उसके क्या दायित्व हैं।

संयुक्त परिवार सामान्यतः केवल भारत में ही दिखाई देते हैं, जहां बुजुर्गों की देखभाल इन संयुक्त परिवारों में बहुत ही सहज तरीके से होती है। अन्यथा, विकसित देशों में चूंकि

संयुक्त परिवार का चलन नहीं के बराबर है अतः बुजुर्गों की देखभाल इन देशों की सरकार को 'सोशल बेनीफिट्स' योजना के अंतर्गत करनी होती है। आज कुछ देशों में तो 'सोशल बेनीफिट्स' की मद पर इतना अधिक खर्च होने लगा है कि इन देशों की बजट व्यवस्था ही भारी दबाव में आ गई है। इसके ठीक विपरीत, भारत में विभिन्न त्योहार भी बड़े ही उत्साह से मनाए जाते है जिसके कारण भारत में सामाजिक तानाबाना ठीक बना हुआ है। भारत में प्रकृति संरक्षण की बड़ी वजह भी यही कुटुम्ब परम्परा है। पीपल और तुलसी जैसे जीवनदायिनी पेड़-पौधों के प्रति कृतज्ञता भाव की बड़ी वजह यही कुटुम्ब परम्परा है।

भाषा विज्ञान में कुटुम्ब का रिश्ता जुड़ता है कुटी या कुटि से। कुटि दरअसल झोपड़ी या एक छप्परदार घर को कहते हैं। यह बना है कुट् धातु से जिसका मतलब हुआ वक्र या टेढ़ा । इसका एक अन्य अर्थ होता है वृक्ष। प्राचीन काल में झोपड़ी या आश्रम निर्माण के लिए वृक्षों की छाल और टहनियों को ही काम में लिया जाता था जो वक्र होती थीं। एक कुटि (कुटी) के निर्माण में टहनियों को ढलुआ आकार में मोड़ कर , झुका कर छप्पर बनाया जाता है। इस तरह कुट् से बने कुटः शब्द में छप्पर, पहाड़ (कंदरा), जैसे अर्थ समाहित हो गए। भाव रहा आश्रय का। इसके अन्य कई रूप भी हिन्दी में प्रचलित हैं जैसे कुटीर, कुटिया, कुटिरम्। छोटी कंदरा या गुफा आदि। विशाल वृक्षों के तने में बने खोखले कक्ष के लिए कोटरम् शब्द भी इससे ही बना है जो हिन्दी में कोटर के रूप में प्रचलित है। गौर करें कि किला अथवा दुर्ग के लिए एक शब्द संस्कृत में है कोटः जिसका हिन्दी रूप है कोट और मतलब हुआ किला या दुर्ग। यह भी बना है कुट् धातु से। आज के कई प्रसिद्ध शहरों मसलन राजकोट, सियालकोट, पठानकोट, कोटा आदि शहरों में यही कोट झांक रहा है। कहने की ज़रूरत नहीं कि इन शहरों के नामकरण के पीछे किसी न किसी दुर्ग अथवा किले की उपस्थिति बोल रही है। इसी से बना है परकोटा शब्द जिसका मतलब आमतौर पर चहारदीवारी या किले की प्राचीर होता है।

यानी परिवार का बोध कराने वाला कुटुम्ब शब्द आश्रय से भी जुड़ा है। 1991 में शुरू हुए आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण ने व्यक्तिवाद और उपभोगवाद को ब?ावा दिया और कुटुम्ब परम्परा के मायने बदलने लगे। लेकिन भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ें इसे अब भी पकड़े है। तभी तो कबीर की बात आज भी लोग भूल नहीं पाये--

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाए
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाए

---00--

बिखरती कुटुंब व्यवस्था का मानव जीवन पर प्रभाव और समाधान

-डॉ. मंजिरी बक्षी
हैप्पीनेस कोच, शिक्षाविद् और काउंसलर

प्रस्तावना

''कुटुंब'' के लिए हिंदी में ''परिवार'', ''खानदान'', ''कुनबा'', ''वंश'', ''कुल'', ''रिश्तेदार'', और ''संबंधी'' जैसे शब्द प्रयोग किए जा सकते हैं। इन शब्दों का उपयोग अलग-अलग संदर्भों में किया जा सकता है, लेकिन सभी का मूल अर्थ ''एक साथ रहने वाले रक्त-संबंधी लोगों का समूह'' है। ''कुटुंब'' शब्द का एक और महत्वपूर्ण अर्थ है, ''वसुधैव कुटुम्बकम्'', जिसका अर्थ है ''पूरी पृथ्वी एक परिवार है''। यह अवधारणा दर्शाती है कि सभी मनुष्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक ही परिवार का हिस्सा हैं (साभार गूगल)

भारतीय संस्कृति में कुटुंब या परिवार को अत्यधिक महत्व दिया गया है। ''वसुधैव कुटुंबकम्'' जैसे विचार हमें यह सिखाते हैं कि समस्त विश्व एक परिवार है। किंतु आज के बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश में पारंपरिक कुटुंब व्यवस्था बिखरती जा रही है। जहां पहले संयुक्त परिवार एक सामान्य परंपरा थी, वहीं आज एकल परिवार और व्यक्तिवादी सोच का प्रचलन बढ़ रहा है। इस बिखरती कुटुंब व्यवस्था का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक स्तर पर।

बिखरती कुटुंब व्यवस्था के कारण

1. औद्योगीकरण और शहरीकरण

औद्योगीकरण ने रोजगार के अवसर शहरों में केंद्रित कर दिए हैं। इसके परिणामस्वरूप लोग गांवों और छोटे कस्बों से शहरों की ओर पलायन करने लगे हैं। इस परिवर्तन में संयुक्त परिवार पीछे छूट जाते हैं और एकल परिवार की संख्या बढ़ने लगती है।

2.आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता एक सकारात्मक बदलाव है, परंतु इसके साथ ही परिवार में परस्पर निर्भरता की भावना में कमी आई है। पति-पत्नी दोनों के व्यस्त रहने से पारिवारिक संवाद और एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

3.आधुनिक शिक्षा और पाश्चात्य सोच

शिक्षा ने लोगों को स्वतंत्र विचारों वाला बनाया है, लेकिन इसके साथ-साथ पाश्चात्य जीवनशैली का अंधानुकरण भी हुआ है। 'माय स्पेस', 'माय लाइफ' जैसी अवधारणाओं ने पारिवारिक सहभागिता को कमज़ोर कर दिया है।

4. प्रौद्योगिकी का प्रभाव

सोशल मीडिया, मोबाइल, और इंटरनेट ने लोगों को आभासी दुनिया में बांध दिया है। घर में रहते हुए भी परिवार के सदस्य एक-दूसरे से कटे-कटे रहते हैं। संवाद की जगह अब

स्क्रीन ने ले ली है।

5. स्वार्थ और अहंकार की वृद्धि

आज का मानव पहले की अपेक्षा अधिक आत्मकेंद्रित हो गया है। वह अपने हितों को प्राथमिकता देता है और पारिवारिक मूल्यों को त्याग देता है। यह प्रवृत्ति कुटुंब को बिखराव की ओर ले जाती है।

बिखरती कुटुंब व्यवस्था का मानव जीवन पर प्रभाव

1. भावनात्मक अकेलापन और अवसाद

संयुक्त परिवार में व्यक्ति को भावनात्मक समर्थन मिलता था, लेकिन एकल परिवार या अकेलेपन के कारण व्यक्ति मानसिक तनाव, अवसाद और आत्महत्या जैसे गंभीर मानसिक रोगों से ग्रस्त हो रहा है।

2.बुजुर्गों की उपेक्षा

पहले परिवार के बुजुर्गों को सम्मान, देखभाल और निर्णयों में स्थान मिलता था। आज की पीढ़ी उन्हें बोझ मानकर वृद्धाश्रम भेज देती है। यह समाज के नैतिक पतन का संकेत है।

3.बच्चों के विकास में बाधा

संयुक्त परिवार में बच्चों को विविध अनुभवों, संस्कारों और प्रेमपूर्ण वातावरण का लाभ मिलता था। आज एकल परिवारों में माता-पिता व्यस्त रहते हैं और बच्चों को अकेलेपन, अनुशासनहीनता और डिजिटल लत का सामना करना पड़ता है।

4.सामाजिक असुरक्षा और अपराधों में वृद्धि

परिवार में जब मूल्य, अनुशासन और निगरानी नहीं रहती, तब समाज में असामाजिक तत्वों की वृद्धि होती है। युवाओं में अपराध की प्रवृत्ति, नशा, और हिंसा जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

5.संबंधों में कटुता और तलाक की बढ़ती घटनाएं

एक-दूसरे को समझने की बजाय जब स्वार्थ और अधिकार की भावना हावी होती है, तब रिश्तों में दरार पड़ती है। यही कारण है कि आज तलाक और वैवाहिक कलह की घटनाएं बढ़ गई हैं।

समाधान- बिखरती कुटुंब व्यवस्था को कैसे संभालें?

1. संवाद को बढ़ावा देना

परिवार में सभी सदस्यों के बीच खुला संवाद होना चाहिए। एक-दूसरे की भावनाओं को समझना, सुनना और सम्मान देना आवश्यक है। डिजिटल उपकरणों से बाहर निकलकर 'पारिवारिक समय' तय करना चाहिए।

2. घर में संस्कार और मूल्य शिक्षा का पुनर्संस्कार

बच्चों और युवाओं को नैतिक शिक्षा, सेवा, सहिष्णुता, बड़ों का सम्मान, और जिम्मेदारी जैसे गुणों का अभ्यास कराया जाना चाहिए। यह कार्य घर से ही प्रारंभ होना चाहिए।

3. बुजुर्गों की भूमिका को पुनर्स्थापित करना

घर के बुजुर्ग ज्ञान और अनुभव के भंडार होते हैं। उन्हें निर्णयों में शामिल करना, समय देना और आदर देना आवश्यक है। यह परिवार की एकता और प्रेम को सुदृढ़ करता है।

4. सामूहिक निर्णय लेना और कर्तव्य-बोध

परिवार में किसी भी निर्णय को एकतरफा लेने की बजाय सबकी राय से लेना चाहिए। साथ ही प्रत्येक सदस्य को अपने कर्तव्यों का बोध होना चाहिए, न कि केवल अधिकारों की अपेक्षा।

5. प्रौद्योगिकी का संयमित उपयोग

डिजिटल उपकरणों का आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए, न कि पारिवारिक संबंधों की कीमत पर। हर दिन कुछ समय ''स्क्रीन फ्री फैमिली टाइम'' के रूप में निर्धारित करना लाभकारी हो सकता है।

6. सांस्कृतिक और पारिवारिक कार्यक्रमों का आयोजन

परिवार में त्यौहार, पूजा, खानपान और पारंपरिक अनुष्ठानों को सामूहिक रूप से मनाना चाहिए। इससे एकजुटता और आपसी प्रेम बढ़ता है।

7.संयुक्त परिवार की महत्ता के लिए स्कूल में शिक्षा

संयुक्त परिवार हमारे समाज की एक महत्वपूर्ण परंपरा है। विद्यालयों में इस विषय पर शिक्षा देना आवश्यक है ताकि बच्चों को पारिवारिक मूल्यों की समझ हो। ऐसी शिक्षा से

बच्चों में संस्कार, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना आती है। स्कूलों को कहानी, नाटक और समूह चर्चा जैसे तरीकों से संयुक्त परिवार की महत्ता को उजागर करना चाहिए, जिससे वे इसे अपनाने के लिए प्रेरित हों।

निष्कर्ष

कुटुंब व्यवस्था केवल एक सामाजिक संरचना नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों, संस्कारों और भावनात्मक संबंधों का आधार है। आज की भागदौड़ भरी और व्यक्तिवादी दुनिया में यदि हम अपनी पारिवारिक व्यवस्था को पुनः सुदृढ़ नहीं करेंगे, तो भावी पीढ़ी सामाजिक और मानसिक रूप से खोखली हो जाएगी।

हमें यह समझना होगा कि एक सशक्त और प्रेमपूर्ण परिवार ही समाज की नींव है। जब कुटुंब सुदृढ़ होंगे, तभी समाज और राष्ट्र भी मजबूत बन सकेगा। अतः हमें व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करके बिखरती कुटुंब व्यवस्था को बचाना होगा — तभी मानव जीवन में संतुलन, शांति और संतोष का पुनः आगमन संभव होगा।

''एक कॉल ने बदल दी जिंदिगी''

रवि, एक 28 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर, मुंबई में अकेला रहता था। रोज़ की नौकरी, ट्रैफिक और मोबाइल की स्क्रीन में उलझा हुआ जीवन — सब कुछ चलते-चलते एक दिन रुक गया।

एक रात वह ऑफिस से देर से लौटा। थका हुआ था, लेकिन जैसे ही घर पहुँचा, उसे अपनी माँ की मिस्ड कॉल दिखी। कुछ सोचकर उसने तुरंत कॉल बैक किया। माँ ने सामान्य बातें कीं, लेकिन उनकी आवाज़ में उदासी थी। रवि ने टाल दिया — ''अभी काम बहुत है, बाद में बात करता हूँ।'' कॉल कट गई।

अगले दिन सुबह, रवि को पड़ोसी का फोन आया — उसकी माँ को हार्ट अटैक आया था। रवि दौड़कर गाँव पहुँचा, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। उस एक कॉल में माँ कुछ कहना चाहती थीं — शायद आखिरी बार।

उस दिन के बाद से रवि ने अपनी जीवनशैली बदल दी। अब वह हर हफ्ते परिवार से बात करता है, समय निकालता है, और रिश्तों को प्राथमिकता देता है।

सीख-

रियल टाइम में हमारे पास सब कुछ नहीं होता, लेकिन जो भी है — जैसे माता-पिता का साथ — वह सबसे कीमती है। कभी-कभी एक कॉल, एक बात, पूरा जीवन बदल सकती है।

संयुक्त परिवार - हमारी आन, बान और शान
आज की जरूरत-कुटुंब प्रबोधन

- रामेश्वर गुप्ता
संयोजक, बिलासा कला मंच,बिलासपुर

संयुक्त परिवारज सुनते ही आंखों के सामने एक बड़ा-सा आंगन, उसमें खेलते बच्चे, दादी की गोद में बैठा कोई नन्हा, रसोई से आती लड्डू की खुशबू और बरामदे में बैठकर अख़बार पढ़ते दादा जी का दृश्य उभर आता है। यह केवल एक परिवार नहीं, बल्कि एक जीवंत दुनिया है, जहां रिश्तों की गर्माहट, हंसी-ठिठोली और एक-दूसरे के लिए जीने का भाव हर पल महसूस होता है।

पहले के समय में दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, मामा-मामी, भाई-बहन - सभी एक ही छत के नीचे रहते थे। घर में हर किसी की जिम्मेदारी तय थी। सुबह कोई गाय का दूध निकालता, कोई रसोई में नाश्ता तैयार करता, तो कोई बच्चों को स्कूल भेजने की तैयारी करवाता। किसी को यह चिंता नहीं होती कि 'ये मेरा काम है या उसका' सब एक-दूसरे के लिए करते थे।

संयुक्त परिवार का असली सौंदर्य तब दिखता था जब कोई खुशी या संकट आता। शादी-ब्याह के मौके पर पूरा घर त्योहार जैसा जगमगाता। महिलाएं मिलकर गीत गातीं, चाचाओं की टोली बारात की तैयारियों में लग जाती, और बच्चे घर के आंगन में दौड़ते-भागते माहौल को और भी चहकाते। वहीं, अगर कोई मुश्किल आती, तो सभी एकजुट होकर खड़े हो जाते। किसी की बीमारी हो या आर्थिक समस्या, परिवार का हर सदस्य कंधे से कंधा मिलाकर उसे पार करता। एक की परेशानी-सबकी परेशानी वाला भाव होता था।

सबसे बड़ी बात यह थी कि यहां 'संस्कार' अपने आप बच्चों तक पहुंच जाते थे। दादी की कहानियां सिर्फ कहानियां नहीं होती थीं, वे जीवन के सबक होती थीं। ''सच बोलना, मेहनत करना और बड़ों का सम्मान करना'' - यह किसी किताब से नहीं, बल्कि बड़ों को देखकर सीखा जाता था। दादा जी के जीवन संघर्ष सुनकर बच्चे समझते कि मेहनत का फल मीठा होता है, और धैर्य से हर मुश्किल हल हो सकती है।

बचपन संयुक्त परिवार में सचमुच सोने की तरह होता था। खेलने के लिए दर्जनों साथी, सिखाने के लिए ढेरों बड़े, और हर समय किसी न किसी के पास बैठकर मन की बात कह देने की आज़ादी। मां अगर व्यस्त हों, तो चाची कहानी सुना देतीं, मामी खाना खिला देतीं, और बड़ी बहन होमवर्क करवा देती। यहां 'मेरा' और 'तेरा' कम, और 'हमारा' ज़्यादा होता था।

आर्थिक रूप से भी संयुक्त परिवार बेहद मजबूत व्यवस्था थी। हर सदस्य अपनी कमाई और मेहनत से घर के खर्च में योगदान देता। एक के पास खेत थे, दूसरे के पास नौकरी, तीसरा छोटा व्यापार करता । इस तरह घर की गाड़ी सहजता से चलती। बड़े फैसले सामूहिक रूप से होते, जिससे किसी को अकेले बोझ नहीं उठाना पड़ता।

आज, तेज रफ्तार जिंदगी, नौकरी के लिए जगह-जगह जाना, और 'निजी स्पेस' की चाह ने संयुक्त परिवार को कमजोर कर दिया है। छोटे-छोटे परिवार बन गए हैं, लेकिन इसके साथ ही रिश्तों की वह गहराई, वह सहयोग और वह सामूहिकता कहीं पीछे छूटने लगी है। लोगों की आत्मकेंद्रित भाव ने वसुधैव कुटुंबकम की भावना को पीछे कर दिया है।

फिर भी, सच यही है कि संयुक्त परिवार की जो ताकत है, वह किसी भी आधुनिक जीवनशैली में नहीं मिल सकती। यह सिर्फ एक रहने का तरीका नहीं, बल्कि भावनाओं, संस्कारों और अपनापन की वह धरोहर है, जो हमारे समाज की जड़ों को मजबूती देती है।

अगर हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ियां सिर्फ भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित न रहें, बल्कि रिश्तों की अहमियत, सहयोग की ताकत और जीवन के असली मूल्य समझें ङ्क तो हमें संयुक्त परिवार की परंपरा को फिर से जीवित करना होगा। अब भी समय है कि जब भी कोई अवसर मिले पूरा परिवार एक साथ मील,बैठें, भोजन करे,सुख दुख की चर्चा कर,घर की कमजोरियों को उजागर कर उसे दूर करें

क्योंकि यही हमारी संस्कृति है, यही हमारी पहचान है, और यही हमारी आन, बान और शान है।

वृद्ध जनो की कुटुम्ब व्यवस्था में भूमिका

- विजय बक्षी
डीजीएस, भारतीय स्टेट बैंक, रायपुर

वृद्धावस्था का परिचय

वृद्धावस्था प्राकृतिक परिवर्तन की एक क्रमिक, निरंतर प्रक्रिया है जो प्रारंभिक वयस्कता में शुरू होती है । प्रारंभिक मध्य आयु के दौरान, शरीर की कई गतिविधियाँ धीरे-धीरे कम होने लगती हैं। लोग किसी विशेष उम्र में ''वृद्ध'' या ''बुजुर्ग'' नहीं बनते। परंपरागत रूप से, 65 वर्ष की आयु को वृद्धावस्था की शुरुआत माना जाता है।

वृद्धावस्था जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है, जिसमें व्यक्ति अनुभव, ज्ञान और जीवन-दृष्टि से परिपूर्ण होता है। यह केवल उम्र का आंकड़ा नहीं, बल्कि जीवन की परिपक्वता का प्रतीक है। जहां एक ओर युवा पीढ़ी ऊर्जा और नवीनता का प्रतीक होती है, वहीं वृद्धजन स्थायित्व, धैर्य और मार्गदर्शन का स्तंभ होते हैं। परिवार रूपी संस्था में वृद्धों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, जिसे अक्सर आधुनिक समाज में अनदेखा किया जाने लगा है।

वृद्धों की पारिवारिक भूमिका

1. अनुभव और मार्गदर्शन का स्त्रोत

वृद्ध व्यक्ति जीवन के उतार-चढ़ाव से गुजर चुके होते हैं। उनके अनुभवों का खजाना अगली पीढ़ियों के लिए अत्यंत उपयोगी होता है। वे अपने अनुभवों के आधार पर परिवार के सदस्यों को उचित सलाह दे सकते हैं, चाहे वह शिक्षा से जुड़ा निर्णय हो, व्यवसाय संबंधी दिशा हो या फिर पारिवारिक झगड़ों में सुलह की प्रक्रिया।

2. संस्कृति और मूल्यों का वाहक

हर समाज और परिवार की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत होती है। वृद्धजन उस विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। वे बच्चों को धार्मिक रीति-रिवाज, पारिवारिक परंपराएं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के बारे में बताते हैं। यह कार्य केवल वे ही कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने इन परंपराओं को जिया है।

3. भावनात्मक आधार स्तंभ

वृद्धजन परिवार के भावनात्मक केंद्र होते हैं। जब परिवार के किसी सदस्य को मानसिक तनाव होता है, तो दादा-दादी या नाना-नानी की बातें एक सुकून देती हैं। उनका स्नेह और सहानुभूति एक प्रकार का भावनात्मक सुरक्षा कवच बनता है।

4. शिशु पालन में सहायता

आज की व्यस्त जीवनशैली में जब माता-पिता नौकरीपेशा हैं, तब वृद्धजनों की उपस्थिति परिवार के लिए वरदान साबित होती है। वे न केवल बच्चों की देखभाल करते हैं, बल्कि उन्हें प्यार और अनुशासन के साथ बड़ा करते हैं। वे बच्चों के पहले गुरु होते हैं, जो उन्हें कहानियों, नैतिक शिक्षा और जीवन जीने के प्रारंभिक सबक सिखाते हैं।

5. संकट काल में धैर्य और स्थिरता

किसी भी पारिवारिक संकट या कठिनाई के समय वृद्धजन अपने धैर्य और अनुभव से स्थिति को संभालने में मदद करते हैं। उनका शांत और संतुलित दृष्टिकोण परिवार को टूटने से बचाता है। वे कभी किसी का पक्ष नहीं लेते, बल्कि पूरे परिवार के हित में सोचते हैं।

समाज में बदलता दृष्टिकोण

दुख की बात यह है कि आज के भौतिकवादी युग में वृद्धजनों को बोझ समझा जाने लगा है। एकल परिवार की प्रवृत्ति, पश्चिमी सोच और व्यस्त जीवनशैली ने वृद्धों को हाशिए पर ला खड़ा किया है। वृद्धाश्रमों की संख्या में दिन–ब–दिन वृद्धि हो रही है, जो सामाजिक विघटन का संकेत है।

ऐसे में यह आवश्यक है कि समाज और परिवार वृद्धजनों की भूमिका को पुनः समझे और उनका सम्मान करे। वे केवल सेवा लेने वाले नहीं हैं, बल्कि देने वाले हैं ङ्क प्रेम, मार्गदर्शन, अनुभव और संरक्षण।

वृद्धों की चुनौतियाँ

1. एकाकीपन और उपेक्षा

परिवार में होते हुए भी कई वृद्धजन अकेलेपन का शिकार होते हैं। उनके विचारों को महत्व नहीं दिया जाता, उन्हें निर्णयों से दूर रखा जाता है, जिससे वे हतोत्साहित और उपेक्षित महसूस करते हैं।

2.स्वास्थ्य समस्याएँ

बुढ़ापे में शारीरिक दुर्बलता स्वाभाविक होती है, लेकिन सही देखभाल के बिना ये समस्याएँ बढ़ जाती हैं। यदि परिवार उनका ध्यान न रखे, तो उनकी स्थिति और दयनीय हो जाती है।

3. आर्थिक निर्भरता

बहुत से वृद्धजन अपने बेटे–बेटियों पर आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं, और कई बार यह निर्भरता अपमान और तिरस्कार का कारण बन जाती है।

समाधान और सकारात्मक पहल

1.सम्मान और संवाद

परिवार को चाहिए कि वृद्धजनों से नियमित संवाद करे, उनके विचारों को महत्व दे, उन्हें पारिवारिक निर्णयों में सम्मिलित करे। इससे वे अपने आपको महत्वपूर्ण और सम्मानित महसूस करेंगे।

2. साथ रहने की व्यवस्था

भले ही आज के दौर में संयुक्त परिवार न हो सके, पर यह जरूरी है कि बच्चे अपने माता–पिता को अपने साथ रखें। यदि भौगोलिक कारणों से साथ न रह सकें, तो नियमित संपर्क, फोन कॉल, वीडियो कॉल आदि से संबंध बनाए रखें।

3.स्वास्थ्य का ध्यान

उनकी नियमित जांच, दवाओं की व्यवस्था और आरामदायक जीवनशैली सुनिश्चित करना परिवार का कर्तव्य है। यदि कोई वृद्धजन बीमार है, तो उसकी सेवा को बोझ नहीं, पुण्य समझना चाहिए।

4. आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन

अगर वृद्धजन शारीरिक रूप से सक्षम हैं, तो उन्हें कुछ रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखना चाहिए ङ्क जैसे पढ़ना, लिखना, संगीत, बागवानी या सामुदायिक सेवा। इससे उनका आत्मविश्वास बना रहता है।

डॉ.प्रमिला नागवंशी के शोध से प्राप्त विवरण

वृद्धावस्था जीवन का अंतिम नहीं, बल्कि सबसे गरिमामय चरण होना चाहिए। यह वह समय है जब व्यक्ति को अपने जीवन के योगदान का सम्मान मिलना चाहिए। यदि परिवार वृद्धजनों की भूमिका को समझे और उन्हें आदर, स्नेह एवं सहयोग प्रदान करे, तो न केवल उनका जीवन सुखद हो सकता है, बल्कि परिवार भी उनके अनुभव और आशीर्वाद से समृद्ध हो सकता है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम सभी को एक दिन वृद्ध होना है। आज यदि हम अपने बुजुर्गों के साथ प्रेम और सम्मान से पेश आते हैं, तो भविष्य में हमें भी वही सम्मान मिलेगा। वृद्ध केवल शरीर से कमजोर होते हैं, लेकिन उनका मन, अनुभव और आशीर्वाद परिवार के लिए अमूल्य धरोहर होते हैं।

''जहाँ वृद्धों का सम्मान होता है, वहाँ संस्कार और समृद्धि स्वयं आ जाते हैं।''

बिखरती कुटुंब व्यवस्था का मानव जीवन पर प्रभाव और समाधान

शताब्दि सुबोध पांडे

कुटुंब - संस्कृति की जड़, राष्ट्र की आत्मा

मानव सभ्यता के विकास में यदि किसी एक संस्था ने सबसे स्थायी, सबसे गहरा और सबसे व्यापक प्रभाव डाला है, तो वह है कुटुंब। यह केवल चार दीवारों में सीमित एक घर नहीं, बल्कि जीवन का पढता विद्यालय, पहला आश्रय, और पहला समाज है। यहीं से मनुष्य बोलना सीखता है, चलना सीखता है, भावनाएँ समझता हैं और जिम्मेदारियाँ निभाना सीखता है।

भारतीय संस्कृति में कुटुंब का महत्व केवल व्यक्तिगत सुख-सुविधा तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसे धर्म, कर्तव्य और संस्कारों का आधार माना गया है। हमारे यहाँ परिवार को केवल रक्त संबंधों का समूह नहीं, बल्कि संस्कार और परंपरा का वाहक माना जाता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक, हमारी सभ्यता ने ''वसुधैव कुटुंबकम'' के भाव को अपने जीवन में उतारा है।

संयुक्त परिवार की परंपरा ने हमें वह शक्ति दी, जिससे हम कठिनतम परिस्थितियों में भी अडिग रहे। यहाँ हर सदस्य दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होता था, बुजुर्ग अनुभव का भंडार थे, युवा ऊर्जा और उत्साह का प्रतीक, और बच्चे परिवार की आशा और भविष्य ।

कहा जाता है, एक समय मगध राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। कई गाँव उजड़ गए, लोग भोजन और पानी के लिए भटकने लगे। ऐसे में एक गाँव के संयुक्त परिवार ने अपनी अनाज की कोठार और कुएँ का पानी पूरे गाँव के लिए खोल दिया। दिन-ब-दिन उनका भंडार घटता गया, पर परिवार के बुजुर्ग ने सभी से कहा -''भोजन खत्म हो सकता है. पर अगर हम एक-दूसरे के साथ खड़े रहे, तो जीवन कभी खत्म नहीं होगा।''

उस कठिन समय में उसी गाँव ने सबसे पहले अकाल से उबरकर अपनी खेती और जीवन को पुन: खड़ा किया। बाद में इतिहासकारों ने लिखा- **''उनके पास अनाज कम था, पर उनका कुटुंब बड़ा था; और वही उन्हें बचा ले गया।''**

लेकिन जैसे-जैसे समय बदला, जीवन की गति तेज़ हुई, और आधुनिकता ने अपनी चकाचौंध से जीवन के मूल्यों को ढंकना शुरू किया, वैसे-वैसे यढ सुदृढ़ संरचना कमजोर होने लगी। अब कुटुंब व्यवस्था केवल सामाजिक चर्चा का विषय नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व, हमारी संस्कृति और हमारे भविष्य से जुड़ा हुआ प्रश्न बन चुकी है।

संयुक्त परिवार - जीवन का विद्यालय

संयुक्त परिवार केवल एक रहने की व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन के मूलभूत पाठ पढ़ाने वाला विद्यालय है -वह भी ऐसा विद्यालय जहाँ शिक्षण की कोई फीस नहीं, पर शिक्षा अमूल्य होती है। यहाँ हमें केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला, सामाजिक व्यवहार, और नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण मिलता है।

इस व्यवस्था में सहयोग केवल एक आदत नहीं, बल्कि संस्कार होता है। बचपन में दादी-नानी की कहानियाँ हमें धैर्य, सच्चाई और परिश्रम का महत्व सिखाती हैं। ताऊ-चाचा के अनुभव हमें कठिनाइयों में निर्णय लेने की शक्ति देते हैं। बुआ-मौसी के स्नेह में हमें अपनापन और त्याग का भाव मिलता है। भाई-बहनों के साथ के खेल हमें प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सामंजस्य और हार-जीत को सहजता से स्वीकारना सिखाते हैं।

संयुक्त परिवार में हर उम्र का व्यक्ति एक शिक्षक की तरह होता है। बुजुर्ग जीवन के ''अनुभव'' के अध्यापक, माता-पिता ''कर्तव्य'' के, और भाई-बहन ''सहयोग'' के। यहाँ अनुशासन और स्वतंत्रता का संतुलन स्वाभाविक रूप से सिखाया जाता है कोई लिखित नियम नहीं, पर हर कोई जानता है कि कैसे रहना है।

इतिहास साक्षी है कि जब भी परिवार संगठित रहे, समाज में स्थिरता और समृद्धि आई है। ग्रामीण भारत में खेत की बुवाई से लेकर फसल की कटाई तक, विवाद से लेकर अंतिम संस्कार तक, हर कार्य में संयुक्त परिवार ने श्रम और भावनाओं का साझा निवेश किया है। यही कारण था कि विपरीत परिस्थितियों में भी ऐसे परिवार टूटे नहीं, बल्कि और मजबूत हुए।

आज जबकि एकल परिवारों में कई जिम्मेदारियों केवल दो-तीन लोगों पर आ जाती हैं, संयुक्त परिवार का महत्व और भी स्पष्ट होता है। यहाँ काम का बँटवारा होता है, भावनाओं का

सहारा मिलता है, और संकट का बोझ हल्का हो जाता है।

संयुक्त परिवार का असली पाठ यही है- ''साथ रहना केवल एक स्थान साझा करना नहीं, बल्कि एक-दूसरे के जीवन में भागीदार बनना है।''

बदलते समय की चुनौतियाँ

पिछले कुछ दशकों में शहरीकरण, व्यस्त जीवनशैली, भौतिकवादी दृष्टिकोण और तकनीक के अत्यधिक हस्तक्षेप ने इस व्यवस्था को कमजोर किया है।

आज संयुक्त परिवार की जगह न्यूक्लियर फैमिली का चलन बढ़ा है, जिसके कारण:

बुजुर्गों का अकेलापन और उपेक्षा बढ़ी हैं।

बच्चों के संस्कार और साझा अनुभवों में कमी आई है।

त्योहार, लोकगीत और पारिवारिक परंपराएँ लुप्त हो रही हैं।

मानसिक तनाव और सामाजिक दूरी बढ़ी है।

इतिहास से प्रेरणा

भारतीय इतिहास में परिवार केवल निजी जीवन का आधार नहीं, वल्कि सामाजिक स्थिरता और राष्ट्र की शक्ति का स्रोत भी रहा है। प्राचीन काल से ही हमारे यहाँ यह मान्यता रही है कि परिवार ही वह स्थान है, जहाँ धर्म, संस्कृति, परंपरा और साहस पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होते हैं।

हमारे ग्रंथों और लोककथाओं में असंख्य उदाहरण हैं, जब संगठित और संस्कारित परिवारों ने समय की कठिन परीक्षा में समाज को नई दिशा दी। महाभारत के पांडव हो या रामायण का रघुवंश, इन कथाओं में परिवार केवल भावनात्मक आश्रय नहीं, वल्कि कर्तव्य और आदर्श का विद्यालय भी था।

संयुक्त परिवार की एक विशेषता यह रही कि संकट के समय हर सदस्य अपनी भूमिका निभाता था - कोई परामर्श देता था, कोई संसाधन जुटाता था, और कोई त्याग करके दूसरों के लिए मार्ग प्रशस्त करता था।

यही कारण था कि आक्रमण, अकाल या सामाजिक उथल-पुथल जैसे बड़े संकट भी समाज को पूरी तरह तोड़ नहीं पाए।

उदाहरण-

1857 की क्रांति के दौरान झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के संघर्ष की कहानी सभी जानते हैं, लेकिन इसके पीछे उनके परिवार और निकट संबंधियों का योगदान कम चर्चा में आता है। जब ब्रिटिश सेना ने झाँसी को घेरा, तब रानी के परिवार के बुजुर्गों और रिश्तेदारों ने न केवल संसाधन और सैनिक जुटाए, बल्कि नगर के सामान्य नागरिकों को संगठित कर हर स्तर पर सहयोग दिया। यह केवल एक शासक का युद्ध नहीं था, बल्कि पूरे ''झाँसी परिवार'' का संघर्ष था, जिसमें हर सदस्य ने अपनी भूमिका निभाई। यही संगठित भावना रानी लक्ष्मीबाई को अंतिम समय तक लड़ते रहने की शक्ति देती रही।

इतिहास हमें यह सिखाता है कि जब परिवार एकजुट होते हैं, तो वे केवल अपने सदस्यों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का संबल बन जाते हैं। उनकी संगठित शक्ति आने वाली पीढ़ीयों के लिए प्रेरणा और आदर्श का स्रोत बनती है।

युवा पीढ़ी के लिए संदेश

युवा किसी भी समाज की ऊर्जा, नवाचार और भविष्य की आशा ढोते हैं। जैसे वहता हुआ जल जीवन देता है, वैसे ही युवा पीढ़ी में नई सोच, नई ऊर्जा और बदलाव की शक्ति होती है। पर यह शक्ति तभी सही दिशा में काम करती है, जब उसकी जड़े मूल्यों, संस्कारों और जिम्मेदारी से सिंचित हों।

आज का युवा तेजी से बदलते समय में जी रहा है। करियर की दौड़, तकनीक की लहर, और आधुनिक जीवनशैली के आकर्षण में पारिवारिक मूल्यों का महत्व कभी-कभी पीछे छूट जाता है। लेकिन यह याद रखना ज़रूरी है कि आधुनिकता अपनाना कोई बुरी बात नहीं, पर अपनी जड़ों से कट जाना सबसे बड़ा नुकसान है।

परिवार केवल आश्रय नहीं, बल्कि पहचान है।

यह वह जगह है जहाँ हम विना किसी मुखौटे के रह सकते हैं।

यह वह शक्ति है जो असफलताओं में भी हमें संभालती है।

यह वह दर्पण है जिसमें दम अपनी असली तस्वीर देख सकते हैं।

युवाओं को चाढिए कि वे अपने बुजुर्गो की कहानियों, अनुभवों और संघर्षों को सुनें। इन कहानियों में वह ताकत है जो किताबों में नहीं मिलती, और वह चेतावनी है जो जीवन की कठिनाइयों से पहले हमें सावधान कर देती है।

युवा पीढ़ी को यह भी समझना होगा कि परिवार केवल हमें सहाय देने के लिए नहीं, बल्कि हमसे योगदान की अपेक्षा रखने वाला संस्थान हैं। माता-पिता और बुजुर्गों के प्रति सम्मान, छोटे भाई-बहनों के लिए मार्गदर्शन, और रिश्तेदारों के साथ जुड़ाव - ये सब केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि रिश्तों की जीवंतता का प्रमाण हैं।

आज की पीढ़ी यदि यह संतुलन बना ले –

एक ओर करियर, तकनीक और आधुनिक जीवनशैली;

और दूसरी ओर परिवार, संस्कार और परंपरा –

तो वह न केवल अपने जीवन को समृद्ध बनाएगी, चल्कि आने वाली पीढ़ीयों के लिए भी एक गजबूत सामाजिक और सांस्कृतिक नींव तैयार करेगी।

समाधान – परंपरा और आधुनिकता का संगम

समाधान की खोज हमें अतीत और भविष्य के बीच पुल बनाने की ओर ले जाती हैं। हमारा अतीत केवल बीती कहानियों का संग्रह नहीं, बल्कि अनुभव, मूल्य और संस्कार का खजाना है। वहीं भविष्य केवल तकनीक और प्रगति का प्रतीक नहीं, चल्कि नवाचार और परिवर्तन की संभावना है। जब हम इन दोनों को एक सूत्र में पिरोते हैं, तभी जीवन और समाज का संतुलित विकास संभव होता है।

भारतीय जीवन दृष्टि हमें सिखाती है कि परंपरा को जड़ता नहीं, बल्कि जीवन की धारा में बहने वाली सतत ऊर्जा के रूप में देखना चाहिए। हमारी परंपराएँ हमें यह बताती हैं कि किस प्रकार परिवार, समाज और राष्ट्र के दिन एक–दूसरे से जुड़े हैं। वहीं आधुनिकता हमें साधन देती है, गति देती है, और व्यापक दृष्टिकोण अपनाने का अवसर देती है।

आज आवश्यकता है कि

तकनीक का उपयोग संपर्क बढ़ाने में हो, न कि दूरी पैदा करने में।

शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार तक सीमित न रहकर संस्कार निर्माण भी बने।

आर्थिक प्रगति के साथ–साथ सामाजिक उत्तरदायित्व को भी अपनाया जाए

परिवार के भीतर समाधान का पहला कदम है संवाद।

संवाद वह सूत्र है जो पीढ़ीयों को जोड़ता है। यदि बुजुर्ग अपने अनुभव और परंपराओं को सहजता से साझा करें, और युवा उन्हें खुले मन से स्वीकार करें, तो परंपरा केवल स्मृति नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शन बन सकती है।

हमारे यहाँ कहा गया है– ''नवीन को अपनाओ, पर मूल को मत छोड़ो''।

इसका अर्थ है कि हम मोबाइल, इंटरनेट और आधुनिक साधनों को अपनाएँ, लेकिन उनकी वजह से अपने

बुजुर्गों के पास बैठकर बात करने की आदत न खोएँ।

हम विश्व की प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़े, लेकिन अपनी मातृभाषा, त्योहारों और पारिवारिक संस्कारों को गर्व–जीते रहें।

यदि परिवार, गाँव, और समाज इस संतुलन को साथ लें, तो कोई भी शक्ति हमारे सांस्कृतिक ताने–बाने क तोड़ नहीं सकती। यह संगम हमें न केवल आधुनिक युग में प्रतिस्पर्धी बनाएगा, बल्कि हमारी पहचान, आत्मबल और सामाजिक एकता को भी अक्षुण्ण रखेगा।

उपसंहार

कुटुंब व्यवस्था केवल एक सामाजिक ढाँचा नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की रीढ़ है। यह वह धागा है जो अलग–अलग पीढ़ियों, विचारों और अनुभवों को एक माला में पियेकर रखता है। जब यह धागा मजबूत होता है, तो समाज की पूरी संरचना सुदृढ़ रहती है, और जब यह ढीला पड़ने लगता है, तो जीवन की सबसे बुनियादी नींव हिलने लगती है।

आज का समय हमें दो राहों पर खड़ा करता है– एक राह है अंधाधुंध आधुनिकता की, जिसमें अपनी जड़ों से कटकर आगे बढ़ना शामिल है। दूसरी राह है उस संतुलन की, जिसमें हम अपनी परंपरा को साथ लेकर आधुनिकता की ओर बढ़ते हैं।

समाधान स्पष्ट है– हमारी सांस्कृतिक जड़ों को थामे रखते हुए भविष्य की ओर उड़ान भरना।

हमें यह समझना होगा कि आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता तभी सार्थक हैं, जब वे समाज और परिवार को मजबूत करें, न कि कमजोर।

युवा पीढ़ी को यह जिम्मेदारी उठानी होगी कि वे केवल अपने करियर और सपनों में ही नहीं, बल्कि अपने परिवार, अपने गाँव और अपने राष्ट्र के उत्थान में भी योगदान दें। बुजुर्गों के अनुभव और युवाओं की ऊर्जा का यह संगम ही एक नई, सशक्त और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भारत की नींव रखेगा।

अंततः, हमें यह याद रखना चाहिए कि – ''जब तक कुटुंब जीवित है, तब तक संस्कृति जीवित है; और जब तक संस्कृति जीवित है, तब तक राष्ट्र अजेय है।''

पं. दीनदयाल उपाध्याय

रेवाराम सोनी

पं.दीनदयाल उपाध्याय नगर रायपुर (छ.ग.)

कहा जाता है, कुछ लोग महान पैदा होते है, कुछ लोग महानता अर्जित करते है. कुछ लोगों पर महानता अर्जित करते है, कुछ लोगों पर महानता थोप दी जाती है। पं. दीनदयाल जी अपने कार्यों और विचारों से महानता अर्जित कर लिए। उनका जन्म किसी समृद्ध धनाड्य घर नही हुआ था, उनके पास कोई सम्पत्ति कोई उच्च पद नहीं था, इसके पश्चात भी राजनीतिज्ञों की उच्च्व पंक्ति में पहुंच गये। अनेक प्रसिद्ध नेता, राजनीतिज्ञ, पद और मृत्यु के पश्चात विस्मरण कर दिये जाते है, भुला दिये जाते हैं।

परन्तु पं.दीनदयाल जी वास्तव में सच्चे महापुरूष थे, जो अपने मृत्यु के बाद भी अब तक याद ही नही किये जाते है, उनके विचारों पर आज भी चिंतन होता है।

पं.दीनदयाल जी का जन्म 25 सितम्बर, 1916 वि.संवत 1973 शालिवाहन शक 1838 भाद्रपद आश्विन कृष्ण 13 को जयपुर अजमेर लाईन पर स्थित धनाकिया ग्राम में हुआ। उनके पिता श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय मथुरा के नगला चंद्रभान ग्राम के निवासी थे, उनके पितामह पं. हरिराम एक ज्योतिषी थे।

माता का नाम श्रीमती राम प्यारी जो धार्मिक प्रवृत्ति की संस्साकारित महिला थी, जब पं.दीनदयाल जी तीन वर्ष के थे तो उनके पिता श्री पं. भगवती प्रसाद जी का देहावसान हो गया तब वे अपनी माता के साथ अपने नाना के यहां चले गये दुर्भाग्य से उनकी आठ वर्ष की अवस्था में माता का भी स्वर्गवास हो गया, तब उनका पालन पोषण उनके मामा श्री राधा रमण शुक्ल ने किया।

पं.दीनदयाल जी साहसी और कुशाग्र बुद्धि के बालक थे, हाईस्कूल सीकर से मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की, अजमेर बोर्ड से सर्वप्रथम स्थान प्राप्त हुआ अपितु हाईस्कूल एवं बोर्ड से अलग-अलग स्वर्ण पदक प्रदान किये गये। पश्चात बिड़ला कालेज पिलानी से इंटरमीडियेट परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। और पुनः स्वर्ण पदक प्राप्त किया फिर सनातन धर्म कालेज कानपुर से गणित विषय में प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। पं.दीनदयाल गणित विषय लेकर आगरा सेण्टजोन्स महाविद्यालय में पढ़ने गये परिस्थितिवश अधूरा छोड़कर प्रयाग जाना पड़ा जहां उन्होंने बी. टी. किया। उन्हें मासिक छात्रवृत्ति भी प्राप्त होती रही।

उनके व्यक्तित्व पर लार्डबाइरन एक स्थान पर लिखते हैं-

So Young, So fair	कितने युवा कितने सुन्दर
Good without effort	स्वभाव से भले
Great without a foe..	महान फिर भी अजात शत्रु

1936 में राष्ट्रीय स्व.सेवक संघ से उनका संपर्क हुआ और वे संघ के स्वयंसेवक बन गये उत्तर प्रदेश में नींव की पत्थर की भांति इतने बड़े राज्य में संघ विस्तार में समर्थ शक्ति बनाने के कार्य में जुट गये।

वे संघ के चिन्तक और संगठन कर्ता हो गये भारत की सनातन विचारधारा को युगानूकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद नामक विचार धारा दी, वे समावेशित विचारधारा के समर्थक थे और सशक्त भारत चाहते थे। कानपुर में अध्ययन के समय अपने सहपाठी बालु जी महाशब्द की प्रेरणा से संघ और संघ संस्थापक डॉ. केशव बलीराम हेडगेवार का सानिध्य कानुपर में मिला संघ का दो वर्षों का प्रशिक्षण पूरा कर जीवन व्रती प्रचारक हो गये, और आजीवन संघ के प्रचारक रहे।

पं.दीनदयाल राष्ट्र जीवन दर्शन के निर्माता माने जाते है,

उनका उद्देश्य स्वतंत्रता की पुर्नरचना के प्रयासों के लिए विशुद्ध भारतीय तत्व दृष्टि प्रदान करना था। भारत की सनातन विचार धारा को युगानुकुल रूप में प्रस्तुत कर एकात्म मानववाद की विचार धारा दी।

उपाध्याय जी पत्रकार चिंतक लेखक थे, वे राजनीति को हिन्दुत्व की धारा में ले जाना चाहते थे।

(1) दो योजनाएं

(2) राजनीतिक डायरी

(3) राष्ट्र चिंतन (पं.जी के भाषण का संग्रह)

(4)भारतीय अर्थ नीति, विकास की दिशा

(5)भारतीय अर्थ नीति का अवमूल्यन

(6)सम्राट चंद्रगुप्त (लघु उपन्यास)

(7) एकात्म मानव वाद जैसे अनेक कृतियां आज भी प्रासंगिक है।

पाञ्चजन्य, स्वदेश का संपादन करते हुए प्रेस का छोटा-मोटा कार्य भी करते थे। वे भारतीय जनसंघ के निर्माता महामंत्री राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे, उनकी संगठन क्षमता और उनके दिव्य दृष्टिकोण को देखकर कानुपर में जनसंघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के श्रीमुख से यह उद्गार निकला ''यदि मेरे पास दो और दीनदयाल होते तो भारत का राजनीतिक स्वरूप बदल देता। पं. श्यामाप्रसाद की मृत्यु के पश्चात जनसंघ का पूरा दायित्व उनके कंधों पर आ गया।

वे स्वावलंबी थे यद्यपि अपने वस्त्र स्वयं साफ करते थे। स्वदेशी वस्तुओं के हिमायती थे और विदेशी सामग्री कभी नही खरीदते थे।

10-11 फरवरी, 1968 की रात्रि मुगलसराय स्टेशन पर उनकी निर्मम हत्या हो गई 11 फरवरी को उनका पार्थिव देह स्टेशन पर रहस्यमय स्थिति में पड़ा मिला जो आज भी रहस्य बना हुआ है।

आज इस स्टेशन को दीनदयाल उपाध्याय जी का नाम मिला है। तत्कालीन गृह मंत्री श्री यशवन्तराव ने आदर्श भारतीय की संज्ञा दी, संघ के तत्कालीन सर कार्यवाह बाला सहाब देवरस ने आदर्श स्वयंसेवक बताया तथा डॉ. हेडगेवार से तुलना की, श्रीनाथ पै ने, गांधी तिलक बोस की परम्परा का पुरूष कहा,

श्री हीरेन मुखर्जी ने अजात शत्रु कहा।

आचार्य कृपलानी ने दैवी गुण सम्पन्न व्यक्ति बताया।

दधीचि की भांति वे देश सेवा कर अपनी हड्डियां न्यौछावर कर दी।

उनका अभाव दीर्घ दीर्घकाल तक देश को रहेगा।

उनके व्यक्तिव विचार को शंताश पूर्ण कर लेना ही उनका सच्चा स्मरण और सच्ची श्रद्धांजली होगी।

ऐसे महामानव को जन्म जयंती पर शत् शत् नमन एवं श्रद्धाञ्जली।

⊙⊙

शिक्षक समाज का दर्पण

श्री देवेश कुमार सोनी प्राचार्य
स. शि. म. उ. मा. आवा. वि. कोनी

प्रस्तावनाः- सामान्यतः समाज शब्द सुनते ही अनुमान लगाया जाता है कि समाज व्यक्तियों का ऐसा समूह है जहाँ एक-दूसरे से बातचीत तो करते ही है साथ ही अपनी भावनाओं, संस्कृति, रीति-रिवाजों और मूल्यो को साझा करते है। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि समाज कैसा होना उचित माना जाएगा ? लोगो की भीड़ को ही एक सभ्य समाज नहीं माना जाएगा। क्योकि देश की उन्नति तभी संभव है, जब समाज रुढीवादी परम्पराओं आपसी होड़, निजी स्वार्थ इत्यादी को छोड़कर नव निर्माण हेतु एकता का दीप प्रज्जवलित करें

समाज में सकारात्मक परिवर्तन करवाने में तथा देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने में अहम भूमिका अदा करने वाला

'शिक्षक ही होता है। शिक्षक शिक्षा रुपी हथियार से अज्ञानता को काटता है। शिक्षक समाज में मौजूद अच्छे और बुरे दोनो पहलुओं को दर्शाता है। बेशक, किसों भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम है, जो अधोरेखांकित करते है- विद्यार्थी और इसे उपलब्ध कराता है 'शिक्षक'

शिक्षक एक दीपक है, जो ज्ञान की लों जलाता है,
हर अज्ञान के अंधकार को, वह दूर भगाता है।
समाज का दर्पण है, शिक्षक का हर कर्म,
सही राह दिखाता है, वह जीवन का मर्म ।

***शिक्षक की भूमिकाः-** समाज की नवचेतना को आकार एवं शिक्षा देने में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। एक समाज का दर्पण व निर्माण वाहक है। नवशिशु नामक कोपल जब इस संसार जगत में प्रवेश करती है, तो उस समय यह परिवार की पाठशाला में माँ नामक शिक्षक से संस्कार व व्यवहार की तालीम ग्रहण करती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सिखाने वाला व सीख देने वाला हर प्राणी शिक्षक है। शिक्षक वह पुंज है जो प्रज्जवलित करता है। वह आफताब है जिसके पास ज्ञानरुपी अमृत का अथाह जल है, जिसका कभी क्षय मुमकिन नही हैं।

किसी भी समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, जैसे कि चाणक्य ने स्पष्ट कहा है " शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद मे पलते है "। समाज मे शिक्षक के महत्व को रेखांकित करते हुए, डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन ने लिखा है कि समाज में अध्यापक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह एक पीडी से दुसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएँ और तकनीकी कौशल पहुंचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है।

शिक्षक छात्रों की यात्रा में मार्गदर्शक प्रकाश की तरह होते है, जो दुनिया के बारे मे उनकी समडा को आकार देते है और उसमे छिपे अवसरों को उजागर करते है। जैसे-छात्र बड़े होते है और अनगिनत संभावनाओं की खोज करते है, शिक्षक उनकी जिज्ञासा और महत्त्वाकांक्षाओ को पोषित करते है। यह प्रभाव शिक्षको को हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण सदस्य बनाता है।

शिक्षक और साम्राज का सम्बन्धः- एक शिक्षक वह व्यक्ति होता है जो समाज के निर्माण खंडो का निर्माण और पोषण करता है। छात्रों के भविष्य का मार्ग निर्धारित कर सकता है। कई बार यह देखा गया है कि हमारे माता-पिता हमें कुछ पालन करने के लिए कहते है, हम उस समय उसका पालन करते है लेकिन अगर एक शिक्षक हमे नई राह बत्ताता है और कहता है कि यही सही रास्ता है, हमें इसका पालन करना चाहिए तो हम आसानी से उनके निर्देशों का पालन करते है। शिक्षक का दृष्टिकोण और व्यक्तित्व भी छात्रो को प्रभावित करता है, और छात्र उसके जैसा बनना चाहते है।, शिक्षक समाज की नींव रखते है। वे समाज के भावीं नागरिको को प्रशिक्षित और पोषित करते है।

शिक्षक और समाज का सम्बन्ध बहुत ही गहरा और महत्वपूर्ण है। शिक्षक समाज के भविष्य को आकार देने मे

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वे न केवल ज्ञान प्रदान करते है। बल्कि छात्रों मे सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक मूल्यों का भी विकास करते है। नागरिक बनाते है और समाज के विकास ने योगदान करने के लिए प्रेरित करते हैं। हिन्दू पर्म में शिक्षक के लिए कहा गया है कि 'आचार्य देवो भवः' यानि कि शिक्षक ईश्वर के समान होता है। यह दर्पण एक शिक्षक को उसके द्वारा समाज में दिए गए योगदान के बदले स्वरुप दिया जाता है। विश्व में केवल भारत हि ऐसा देश है जहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते है, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है।

समाज और शिक्षा के उद्धारक के रूप में शिक्षकः- समाज और शिक्षा के उद्धारक के रुप में कई महान व्यक्तियों को जाना जाता है जिन्होने अपने-अपने तरीको से समाज और शिक्षा के क्षेत्र गे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमें से कुछ प्रमुख नाम है राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, सावित्रीबाई, ज्योतिबा फुले और डॉ. भीमराव आम्बेडकर।

01. राजा राममोहन रायः भारतीय समाज मे व्याप्त सती प्रथा, बाल विवाह और जातिवाद जैसी सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होने शिक्षा के महत्व को समझा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली को बढ़ाया दिया।

02. स्वामी विवेकानंदः-उन्होंने युवाओ को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने और राष्ट्रीय चेतना जगाने का काम किया। उन्होंने ''कर्मयोग'' ''भक्तियोग'' और ''ज्ञानयोग'' के माध्यम से समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया।

03. महत्मा गाँधी- गाँधी जी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन की एक अवधारणा दी, जिसमे शिक्षा को जीवन से जोड़ा गया और आध्मनिर्भरता और सामाजिक सेवा पर जोर दिया गया।

04. सावित्रीचाई फुले और ज्योतिवा फुलेः- फुले दंपति ने महिलाओं और दलितो की शिक्षा के लिए अथक प्रयास किए। उन्होने बालिकाओं के लिए पहला स्कूल खोला और समाज में समानता स्थापित करने के लिए सत्यसाधक समाज की स्थापना की।

05. भीमराव अंबेडकरः- उन्होने शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता का एक महत्वपूर्ण हथियार माना। उन्होने दलितों और पिछड़े वर्गों के उत्यान के लिए शिक्षा को आवश्यक बनाया।

06. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का सामाजिक योगदानः- सर्वपल्ली राधाकृष्णन का व्यक्तितत्व किसी पहचान के मोहताज नहीं है क्योंकि जब-जब शिक्षको के समाज मे योगदान की बात होगी तब-तब इन महान शिक्षक सर्वपल्ली जी की छबि से स्वतः ही मन प्रफुल्लित हो उठता है। सर्वविदित है कि इनका जन्म दिवस 5 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक शिक्षक का यह सपना होता है कि वह भी सर्वपल्ली जी के व्यक्तित्व के कुछ अंशो को अपने जीवन में उतार पाए।

सर्वपल्ली राधकृष्णन के शैक्षिक विचार, शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और संस्कृतिक परिवर्तन का साधन मानते थे।

उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करना ही नही है, बल्कि यह छात्रो को स्थायी मूल्यों की खोज में भी मद्द करनी चाहिए।

राधाकृषणन के शैक्षिक विचारो का सारः-

01. शिक्षा एक सामाजिक, आर्थिक और संस्कृतिक परिवर्तन का साधन हैः- राधाकृष्णन शिक्षा को एक उपकरण मानते थे जिसके द्वारा सामाज में साकारात्मक बदलाव लाए जा सकते है।

02. शिक्षा का उदेश्य स्थायी मूल्यों कि खोजः- उनका मानना था कि शिक्षा छात्रों को ना केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करे, बल्कि उन्हे स्थायी मूल्यों जैसे कि सत्य, प्रेम और न्याय की खोज करने में भी मद्द करें।

03. शिक्षक की भूमिकाः राधाकृष्णन के अनुसार - शिक्षको को देश का सर्वश्रेष्ठ दिमाग होना चाहिए और उन्हे छात्रों को प्रेरित करने और उनमे नैतिक मूल्यों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

04. पाठ्यक्रमः उनका मानना था कि पाठयक्रम में विभिन्न विषयों को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि छात्रों का सर्वांगिन विकास हो सके।

05. सामाज और देश के निर्माण में शिक्षको का अहम योगदान:- शिक्षक सामाज मे उच्च आदर्श स्थापित लाने वाला व्यक्तित्व होता है किसी भी देश या सामाज के निर्माण मे शिक्षक कि अहम् भूमिका होती है। वस्तुत: शिक्षक ही समाज का आईना होता है।

हिन्दु धर्म में शिक्षक के लिए कहा गया है कि "आचार्य देवो भव:" यानि कि शिक्षक या आचार्य ईश्वर के समान होता है। यह दर्जा एक शिक्षक को उसके द्वारा समाज में दिए गए योगदानो के बदले स्वरूप दिया जाता है। माता-पिता बच्चे को जन्म देते है, उनका स्थान कोई नही ले सकता। उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उत्तार सकते, लेकिन एया शिक्षक हि है, जिसे हमारी भारतीय संस्कृति माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है, बच्चों को शिक्षक ही समाज में रहने योग्य बनाते है इसलिए ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा गया है। गुरु या शिक्षक या संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देना ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को सिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमडे हुए सवाल का जवाब होता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है व जीवन मे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

शिक्षक छात्रो को ज्ञान, आलोचनात्मक सोच, कौशल और मूल्य प्रदान करते है, उन्हे जिम्मेदार बनाते हुए उनकी प्रोडक्टिवीटी को पुष्ट कराते है। शिक्षित व्यक्तियो को सार्थक रोजगार मिलने अर्थव्यवस्था में योगदान देने और जीवन के विभिन्न पहलुओं में सोच समझकर निर्णय लेने की अधिक संभावना होती है। इसके अलावा शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को सक्षम बनाती है गरीबी के चक्र को तोड़ती है व्यक्तियो और उनके परिवारों के जीवन की समग्र गुणवत्ता मे सुधार करती है। शिक्षक सामाजिक एकता और समावेशिता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। कक्षा मे छात्र विविध पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों और अनुभवो से आते है। शिक्षक एक समावेशी और स्वागत योग्य वातावरण को बढ़ावा देते है। छात्रो को विभिन्न दृष्टिकोणों का सम्मान करना और उनकी सराहना करना सिखाता है। सहानुभूति और समझ का पोषण करके, शिक्षक पूर्वाग्रह और भेद-भाव को कम करते हुए एक सामंजस्य पूर्ण और सहिष्णु समाज की नीवं बनाते हैं।

शैक्षिक पाठो से परे शिक्षक अपने छात्रो में करूणा, दयालुता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्य पैदा करते है। वे सक्रिय नागरिकता और सामुदायिक सेवा में संलग्नता को प्रोत्साहित करते है, छात्रो को समाज को वापस देने के लिए प्रेरित करते है सामाजिक जिम्मेदारी की भावना का पोषण करके, शिक्षक अगली पीढ़ी को सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति बनाने के लिए प्रेरित करते है। जो अपने समुदायो की बेहतरी के लिए सक्रिय रूप से काम करते है

उपसंहार:-शिक्षक को समाज में सदैव हि सर्वश्रेष्ठ पद पर रख कर उनकी बुद्धिमत्ता का सम्मान किया गया है बड़े-बड़े राजाओं के मस्तक शिक्षक के चरणों मे नतमस्तक हुए है। यदि प्राचिन समय कि बात की जाए तो शिक्षक के आश्रम में रहकर हि राजकुमार अपना जीवन बिताते थे। आश्रम मे हि उनकी शिक्षा-दीक्षा संपन्न होती थी। हमारे वेद ग्रंथो मे शिक्षक को साक्षात ब्रह्मा विष्णु व महेश की संज्ञा दी गई है। शिक्षक समाज की धुरी है जिसके मार्गदर्शन ने देश का निर्माण करने वाला भविष्य सुशिक्षित व प्रशिक्षित होता है।.

नरेन्द्र को स्वामी विवेकानंद बनाने वाले व शिव (शंभू) को, क्षत्रपति शिवाजी बनाने वाले शिक्षक स्वामी राम कृष्ण व समर्थ गुरू रामदास ही थे। चाणक्य जैसे शिक्षक के आक्रोष ने चन्द्रगुप्त मौर्य का निर्माण कर घनानंद के अहंकार का मर्दन कर दिया था। शिक्षक की प्रेरणा और ज्ञान से पत्थर पारस बने है। अपना भारत देश सदैव से हि शिक्षकों की खान रहा है। इस देश में कई शिक्षक ऐसे हूए, जिन्होने अपने शिक्षण कला के माध्यम से नगीने तैयार कर अपना गौरव बढ़ाया है।

"शिक्षक की बाते, जीवन की सीख
उनकी शिक्षा, देती है हमे नवीन लीक।
समाज का दर्पण, उनका ज्ञान
सत्य अहिंसा और प्रेम का महान।"

रक्षाबंधन त्योहार

- डॉ. एम.एल. नत्थानी
रायपुर, छत्तीसगढ
मो. 9893333786

रक्षाबंधन का अभिनंदन
भाई बहन के प्रेम को वंदन ।
माथे पर सजता रोली चंदन
मन हर्षित होकर बना कुंदन ।।

रक्षा – सूत्र बंधा कलाई पर
बहन करती गौरव भाई पर ।
दूर रहती चाहे पास बहन की
दुआ रहती सदा भलाई पर ।।

सबसे प्यारा रिश्ता पावन
रक्षाबंधन त्योहार सावन ।
हृदय प्रेम बसे मनभावन
खुशियां महके हर आंगन ।।

बहनों की मुस्कान खातिर
भाई सदैव रक्षा को तत्पर ।
अटूट विश्वास का परस्पर
रहता आया स्नेह निरंतर ।।

निस्वार्थ प्रेम का मधुबन
घर परिवार को सजाता है ।
भाई बहन के अनमोल रिश्ते
से संबधों को महकाता है ।।

गरीब के सपना

- दिलीप जायसवाल
(आचार्य सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय नवागढ़)
मो. न.- 8817838429

मैं गरीब के लइका संगी
खेती किसानी मोर काम गा
दाई दादा के कहना हे ,तै पढ़ लिख जा बेटा
शिक्षित होबे नौकरी पाबे बन जाबे तै नेता
ड्रेस मोर चीरहा फटहा कईसनों करके पढ़े हव
बारा पकती के निसैनी संगी धीरे-धीरे मैं चढ़े हव
नौकरी नहीं पाहूं ता बन जाहूं कलाकार
अब्बड मेहनत करहूं नई जान दौ बेकार
खेती किसानी करें म नई करो आनाकानी
घर में बईठे दाई दादा ला
सुघ्घर देहूँ मैं पानी
सुघ्घर देहूँ मैं पानी

कविता

- मीना रावले
पूर्व आचार्य

कुटुम्ब है भरा-पूरा,
ये हमारी शान है.
छिपी हुई है इसमें तो,
संस्कारों की खान है.
समाज का है दर्पण ये,
मांगता है अर्पण कुछ.
नाना रिश्ते भावनाएं,
आज की ये मांग है.
जो महसूस हो दरकार,
मिले गुणी जनों का प्यार.
नई पीढी का देगा ये,
अहसास ही जीवन संवार.
वक्त बीतते मगर,
मन मे रहता क्यूं मलाल.
आपस मे दूरियों के,
उठने लगे ज्यूं गुबार.
बन रहे वृद्धों के आश्रम,
तरस रहे शिशु को आंगन.
तिल-तिल बिखरते रिश्ते,
न जाने हम कौन किसके.
स्वतंत्रता की चाह मे,
उन्मुक्तता की राह पर.
बिछडते परिवारों से,
सच यही है जानकर.
कुटुम्ब का न जाने मान,
बंद मुट्ठी जैसा जान.
ताकत हिम्मत है इसकी आन,
शक्ति है इसकी पहचान.
संगठन की शक्ति जान,
भविष्य का इसमे उत्थान.

जिंदगी की आपाधापी

- डॉ. एम.एल. नत्थानी
रायपुर, छत्तीसगढ़
मो. 9893333786

जिंदगी की आपाधापी में
बचपन कहीं खो गया है ।
काम बहुत होने के कारण
अपनापन कहीं खो गया है ।
बुजुर्ग बोझ बन गए हैं अब
हर बच्चा बुद्धिमान है अब ।
उजड़ गए बाग बगीचे सब
दो गमलों में शान है अब ।
गांव तो वीरान हो गए अब
शहरों में सड़कें सब जाम हैं ।
फुर्सत किसी के पास नहीं
सबके पास बहुत काम है ।
बंद हो गई चिट्ठी पत्री अब तो
मोबाइल पर मैसेज बहुत हैं ।
एकल जिंदगी की चाहत में
फैमली की इमेज बहुत है ।
सुविधाओं का सामान बहुत
फिर भी इंसान परेशान है ।
नहीं बचे कोई सगे संबधी
फिर भाग दौड़ से हैरान है ।
यह कैसा आपाधापी का ही
नित अनदेखा अंधा दौर है ।
संबधों की चादर सिमटी पर
मन व्याकुल बाहर शोर है ।

हिन्दी दिवस

– श्रीमती सरला कश्यप
पूर्व आचार्य
स.शि.मं. देवेन्द्र नगर

हिन्दी हिन्दुस्तान के गर्व की भाषा है जिसने पूरे विश्व मे हमें एक अलग पहचान दिलाई है। हिन्दी पूरे विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक लगभग सभी लोग हिन्दी को आसानी से समझ लेते है। हिन्दी सबसे सरल और आसान भाषा है लेकिन फिर भी कहीं न कहीं आज के युग में हिन्दी पिछड़ती दिखाई दे रही है। इसीलिए हिन्दी के सम्मान के लिए हम हर साल 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस और 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं ताकि हिन्दी के प्रति लोगों का नजरिया बदल सके।

सन् 1949 में भारत की संविधान सभा ने देश की आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया और तभी से ही भारत में अंग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाएँ औपचारिक रूप से इस्तेमाल होने लगीं। वैसे तो सन् 1949 से हर साल 14 सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन पहला अधिकारिक हिन्दी दिवस 14 सितम्बर सन् 1953 को मनाया गया था। भारत की करोड़ों की आबादी को जोड़ने वाली भाषा है हिन्दी, एक हिन्दुस्तानी को कम से कम हिन्दी भाषा का इतना ज्ञान तो जरूर होना चाहिए कि वह हिन्दी को अच्छे से पढ़ सके, समझ सके, बोल सके और लिख सके। हिन्दी भाषा को सम्मान दिलाने के हमारे देश के बहुत से महान साहित्यकारों ने जैसे मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी जी आदि ने हर सम्भव और सफल कोशिश की। इन नामों में हिन्दी के महान साहित्यकार त्यौहार राजेन्द्र सिंह का नाम भी सामने आता है जिन्होंने अपने साथ काका कालेलकर हजारी प्रसाद द्विवेदी सेठ गोविंद दास आदि साहित्यकारों के साथ मिलकर हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए अथक प्रयासरत रहें।

हिन्दी विशेष रूप से भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और मंदारिन, चीनी और अंग्रेजी के बाद दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली बाषा है, भारत के अलावा मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, नेपाल टोबैगो, त्रिनिदाद जैसे देशो की एक बड़ी आबादी हिन्दी बोलती है, हिन्दी को भारत के साथ फिजी में भी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिन्दी भाषा की फिल्में और गाने दुनिया भर में लोकप्रिय है। वर्तमान में बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भी अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिए हिन्दी भाषा को अपना रही है हमें भी अपनी राजभाषा पर गर्व होनी चाहिए।

उत्तराखंड यात्रा भाग 01 यमुनोत्री धाम

टूर ट्रिप एक्स कंपनी, गाड़ी हुंडई एक्सेंट – ड्राइवर सचिन कुमार

–श्रीमती रश्मि रामेश्वर गुप्ता
लेखिका
बिलासपुर छ.ग.

मई का महीना था । विद्यालय में गर्मी की छुट्टियां थी। इस बार हमे चारों धाम की यात्रा पर जाना था। 11/05/25 दिन सोमवार दोपहर 3 बजे की ट्रेन थी। ट्रेन लेट थी। शाम 5.18 पर बिलासपुर से हरिद्वार के लिए कलिंगा उत्कल एक्सप्रेस से मै मेरे पति और हमारे दो बच्चे राजर्षि और ऋषिका निकले। सुबह 6.30 बजे हम झांसी पहुंचे। 12/04/25 दिन सोमवार को रात्रि 8.00 बजे पहुंचे हरिद्वार। हाउस ऑफ जिप्सी द केशव प्लेस में रूम नंबर 302 में गए जो कि पहले ही हमारे नाम से बुक था ।

दूसरे दिन सुबह हरिद्वार में स्वामी नारायण घाट में स्नान किए। रोप वे का टिकट एक साथ लेकर मानसा देवी मंदिर और चंडी मंदिर के दर्शन करते शाम के 04 बज गए। वहां और भी मंदिर हैं जिनमें दक्षेवर मंदिर ,सती कुंड और पारद शिव जी मंदिर है।

वास्तव में हरिद्वार में गंगा स्नान के बाद चारों धाम की यात्रा शुरू होती है हरिद्वार, गंगा नदी के किनारे स्थित एक प्राचीन और पवित्र शहर है, इसे 'ईश्वर का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है. इसे मायापुरी, कपिला, गंगाद्वार के नाम से भी जाना जाता है। हरिद्वार में बहने वाली गंगा का नाम भागीरथी है जिसे गंगा की मूल धारा माना जाता है, 3,892 मीटर (12,770 फीट) की ऊंचाई पर स्थित गौमुख, गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है। हरिद्वार में आकर गंगा मैदानी भाग में प्रवेश करती है इसलिए हरिद्वार को गंगा का अवतरण स्थल कहा जाता है। यहां हर की पौड़ी, हरिद्वार का मुख्य घाट है और यह गंगा नदी के तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है. यह माना जाता है कि यहाँ भगवान विष्णु ने अपने पैर रखे थे, जिसके कारण इस घाट को "हरि की पौड़ी" कहा जाने लगा, जो बाद में "हर की पौड़ी" बन गया. इस स्थान को हरिद्वार का हृदयस्थल माना जाता है।

कहा जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने अपने भाई भरथरी की याद में इस घाट का निर्माण करवाया था, जो गंगा के तट पर ध्यान किया करते थे.

हर की पौड़ी के भीतर एक क्षेत्र को ब्रह्मकुंड के नाम से जाना जाता है, जो सबसे पवित्र माना जाता है.

मान्यता है कि हर की पौड़ी में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है. हर की पौड़ी पर शाम को गंगा देवी की भव्य आरती की जाती है, जो एक मनमोहक दृश्य होता है.

एक अन्य मान्यता के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान अमृत की एक बूंद यहां गिरी थी, इसलिए यह स्थान विशेष रूप से पवित्र माना जाता है.

हरिद्वार में हर छह साल बाद अर्ध कुंभ और हर बारह साल बाद कुंभ मेला का आयोजन होता है, जो कुंभ मेले के चार स्थानों में से एक है.

हरिद्वार अपने प्राचीन मंदिरों, धार्मिक स्थलों और सांस्कृतिक समारोहों के लिए जाना जाता है.

गंगा सिर्फ एक नदी नहीं है पूरे विश्व के लिए एक वरदान है और हम कितने खुशनसीब हैं जो हमारे देश में गंगा बहती है। हम गंगा को मां कहते हैं । मां अपने बच्चों के न जाने कितने अपराधों को क्षमा करती है। पुण्य सलिला मां गंगा वैसे ही हमारे सारे अपराधों को क्षमा करती हुई हमें नवजीवन प्रदान करती है तभी तो हम गंगा को जीवन रेखा कहते हैं। इतने प्रदूषण के पश्चात भी गंगा का जल कभी खराब नहीं होता ये अद्भुत है। अद्भुत है हमारा भारत देश ।

माता मनसा देवी मंदिर ,हरिद्वार

भारत के उत्तराखंड राज्य के पवित्र शहर हरिद्वार में देवी मनसा देवी को समर्पित एक मंदिर है। यह मंदिर हिमालय की सबसे दक्षिणी पर्वत श्रृंखला शिवालिक पहाड़ियों में बिल्व पर्वत पर स्थित है। मनसा देवी मंदिर का निर्माण मणि माजरा के महाराजा गोपाल सिंह ने 1811 ई. से 1815 ई. के बीच करवाया था।

भगवान शिव का एक लंबा-चौड़ा परिवार है, जिसमें उनकी पत्नी पार्वती समेत पुत्र कार्तिकेय, गणेश, पुत्री अशोकसुन्दरी और मनसा है। मनसा देवी उनकी सबसे छोटी पुत्री है, जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं। हरिद्वार में इनका मंदिर है, जो सर्पदंश के इलाज के लिए बेहद प्रसिद्ध है।

हरिद्वार और मनसा देवी मंदिर के बीच की दूरी लगभग 2.5 किलोमीटर है। पैदल चलने के लिए डेढ़ किलोमीटर की चढ़ाई चढ़नी पड़ती हैं और कुल 786 सीढ़ियाँ हैं । रोप वे की सुविधा भी उपलब्ध है।

चंडी देवी मंदिर

हरिद्वार में नील पर्वत पर स्थित है और हर की पौड़ी से लगभग 4 किलोमीटर दूर है। मंदिर तक पहुंचने के लिए या तो चंडीघाट से 3 किलोमीटर की चढ़ाई करनी पड़ती है और सीढ़ियां चढ़कर मंदिर तक जाना होता है या रोपवे द्वारा यात्रा की जा सकती है। मंदिर में स्थापित मूर्ति आठवीं शताब्दी में आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी।. 1929 में, कश्मीर के राजा सूचा सिंह ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब दानवों के राजा शुम्भ और निशुम्भ देवताओं पर काफी अत्याचार करने लगे थे और स्वर्ग लोक पर कब्जा जमाना चाहते थे, तब माता पार्वती के तेज से चंडिका देवी का उदय हुआ था। उस समय माता चंडिका ने इसी स्थान पर दोनों राक्षसों का वध किया था और कुछ समय विश्राम भी किया था। इसी कारण इस पहाड़ी पर माता का मंदिर बना।

मनसा देवी मंदिर और चंडी देवी मंदिर के दर्शन करने के बाद शाम को 04 बजे हम ऋषिकेश घूमने गए जहां राम झूला देखने गए । शाम के समय राम झूले से देखने पर नदी का और चारों ओर का दृश्य अत्यधिक मनमोहक लगता है। राम झूले के बाद त्रिवेणी घाट आकर गंगा आरती में शामिल हुए। त्रिवेणी घाट जब पहुंचे तो आरती से पूर्व हनुमान चालीसा का बहुत ही सुंदर पाठ भक्तगणों के द्वारा किया जा रहा था। श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर इतना सुंदर आयोजन देखकर अंतर्मन पुलकित हो उठा।

ऋषिकेश के आसपास घूमने के लिए कई अच्छी जगहें हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं-

लक्ष्मण झूला-

गंगा नदी पर बना एक प्रसिद्ध झूला है जो ऋषिकेश की पहचान है.:

त्रिवेणी घाट-

गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम स्थल है, जहां गंगा आरती होती है.

स्वर्ग आश्रम-

परमार्थ निकेतन आश्रम और राम झूला यहां के प्रसिद्ध स्थल हैं.

नीलकण्ठ महादेव मंदिर-

भगवान शिव को समर्पित एक प्रसिद्ध मंदिर है।

चोपटा-

''उत्तराखंड का स्विट्जरलैंड'' भी कहा जाता है, जहां तुंगनाथ मंदिर, देवरिया ताल और चंद्रशिला ट्रेक हैं।

कनाताल-

कनाताल अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है, जहां देवदार के पेड़ और शांत वातावरण है।

डोडीताल-

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित एक सुंदर ताल है, जो ट्रेकिंग के लिए लोकप्रिय है।

लैंसडाउन-

ऋषिकेश के पास एक शांत हिल स्टेशन है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

वशिष्ठ गुफा-

योग और ध्यान के लिए एक प्रसिद्ध जगह है.

फूलचट्टी–

प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर एक छोटा सा हिल स्टेशन है।

देवप्रयाग–

अलकनंदा और भागीरथी नदियों का संगम स्थल, जहां से गंगा नदी बनती है.

टिहरी बांध–

ऋषिकेश से करीब 86 किलोमीटर दूर एक सुंदर बांध है.

त्रिवेणी घाट पर मां गंगा की आरती देखकर पुलकित मन से ऋषिकेश से आकर भोजन करके रात्रि विश्राम किए।

14/05/25 बुधवार को हरिद्वार से सुबह 8.30 बजे निकले ड्राइवर सचिन कुमार के साथ चार धाम यात्रा के लिए।

अमृतसरिया ढाबा में मिक्स पराठा खाए फिर मसूरी में भट्टा फाल पहुंचे 12 बजे दोपहर में पुत्री ऋषिका को एडवेंचर का बड़ा शौक है। उसने स्काई साइक्लिंग की 500/ में और हम दोनों की वीडियो शूट हुई 250/ में और 425/ प्रति व्यक्ति पर रोप वे से हम आस पास के सुंदर दृश्य देखे।

शाम को 4.30 बजे नौगांव में आर जी रेसीडेंसी पहुंचे रूम नंबर 102 में रुके। सबसे पहले मैने ऑनर से पूछा – यहां आसपास केले का पेड़ है क्या ?

उन्होंने कहा – हां है।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैने कहा – कहां है ?

उन्होंने दिखाया – वो देखिए।

मैने देखा केले के फल से लदा हुआ एक केले का पेड़ पास ही खड़ा है।

मैं बहुत खुश हुए क्योंकि अगले दिन गुरुवार था मेरा व्रत था और मुझे केले के पेड़ की पूजा करनी थी।

15/05/25 गुरुवार को सुबह स्नान करके केले के पेड़ की पूजा करके और गुरुवार व्रत कथा पढ़के सुबह 04 बजे नौगांव आर. जी रेसीडेंसी से 08 किलो मीटर बड़कोट पहुंचे फिर बड़कोट से 45 ह्मद्व दूर जानकी चट्टी सुबह 06 बजे पहुंचे। जमुना देवी जी के होटल में मस्त वाली चाय पिए, चार छड़ी खरीदे 30/ की एक, फिर चढ़ाई हुई शुरू। मैं अपनी जर्किन रूम में ही भूल आई थी। बेटे ने अपनी जर्किन मुझे पहना दी ये कहकर कि उसे अधिक ठंडी नहीं लग रही।

धीरे धीरे चढ़ाई शुरू हुई। लाठी का सहारा था। पतले संकरे रास्ते सिर के ऊपर चट्टान और बाजू में ऊंचाई के साथ बढ़ती खाई उसमें भी यमुना मैया का स्वरूप। ऊपर आसमान चूमते पर्वत और बर्फ पर सूर्योदय की किरणों के अदभुत नज़ारे। स्वर्णिम बर्फ की चोटियां। अद्भुत दृश्य जिधर देखिए बस देखते ही रहने को जी चाहे। जैसे जैसे ऊंचाई बढ़ने लगी पसीने छूटने लगे। मन में कौतूहल कि और कितनी चढ़ाई बाकी है ?

यमुनोत्री उत्तरकाशी जिले, उत्तराखण्ड राज्य में समुद्रतल से 3235 मी0 ऊँचाई पर स्थित वह स्थान है जहाँ से यमुना नदी निकलती है। यह देवी यमुना का निवास स्थल भी है।

यहाँ पर देवी यमुना का एक मंदिर है। यह एक प्रमुख तीर्थ भी है और चार छोटे धामों में से एक है। यमुनोत्री मंदिर देवी यमुना को समर्पित है, जिन्हें भगवान सूर्य की पुत्री और यम (मृत्यु के देवता) की बहन कहा जाता है। मंदिर के अंदर देवी यमुना की एक जटिल नक्काशीदार मूर्ति है जो पॉलिश किए गए काले आबनूस से बनी है। इस मंदिर का निर्माण मूल रूप से 19वीं शताब्दी में टिहरी गढ़वाल के महाराजा प्रताप शाह ने करवाया था। तब से, प्राकृतिक आपदाओं (भूस्खलन और भूकंप) के कारण हुए नुकसान के कारण इसे कई बार जीर्णोद्धार किया गया है। संरचना में किए गए परिवर्तनों के बावजूद, मंदिर का आध्यात्मिक, दिव्य और ऐतिहासिक सार अपनी मूल जड़ों के साथ बरकरार है।

यमुनोत्री ट्रेक लगभग 6 किमी लंबा है, जो जानकी चट्टी से शुरू होता है। ट्रेक आसान स्तर का है, बहुत खड़ी चढ़ाई नहीं है, और इसमें लगभग 3–4 घंटे लगते हैं।

यमुनोत्री मंदिर की यात्रा में आपको खूबसूरत हिमालय पर्वतों के अद्भुत नज़ारे देखने को मिलेंगे। जैसे ही आप मंदिर के रास्ते पर चलेंगे, आप बर्फीली चोटियों, पहाड़ी पौधों से भरी घाटियों और चट्टानों पर बहती साफ धाराओं से घिरे होंगे। ये खूबसूरत नज़ारे फ़ोटो खींचने या बस चुपचाप बैठकर प्रकृति

का आनंद लेने के लिए एकदम सही हैं। यमुनोत्री के आस-पास की प्राकृतिक सुंदरता आपकी आध्यात्मिक यात्रा को और भी खास बनाती है, जो आपको इन अविश्वसनीय पहाड़ों में दिव्य और आश्चर्यजनक प्रकृति से जोड़ती है।

यमुनोत्री धाम में गर्म पानी के कुंड को सूर्य कुंड कहा जाता है।

यमुनोत्री में सूर्य कुंड एक तापीय झरना है, जो यमुनोत्री मंदिर के परिसर में स्थित है। इस कुंड का नाम सूर्य देवता के नाम पर रखा गया है, जो देवी यमुना के पिता हैं, इसलिए इस क्षेत्र में यह सूर्य और यमुना के बीच के रिश्ते का प्रतीक है.

कई तीर्थयात्री प्रसाद तैयार करने के लिए सूर्य कुंड पर रुकते हैं।

यह कुंड सदियों से यमुनोत्री मंदिर जाने वाले भक्तों के मार्ग का हिस्सा रहा है।भक्तों का मानना ??है कि सूर्य कुंड के पानी में उपचार करने की शक्ति है, इसलिए वे यहाँ स्नान करते हैं। कुंड में प्रसाद उबालने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जो यमुनोत्री धाम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सूर्य कुंड में भूतापीय गतिविधि के कारण पानी का तापमान बहुत अधिक रहता है। सूर्य कुंड मंदिर जिसका इतिहास सूर्यवंश से लेकर महाभारत काल तक पाया जाता है ।उस समय यहां इस कुंड का निर्माण कर राजा मांधाता द्वारा इस कुंड में खड़े होकर यमुना जी और सूर्य भगवान का आह्वान किया गया था।

यमुनोत्री मंदिर में सूर्य कुंड के अलावा एक दिव्य शिला भी है, जो एक चट्टानी स्तंभ है जिसमें आध्यात्मिक और दिव्य तत्व समाहित हैं। तीर्थयात्री इस शिला की पूजा करते हैं, जो यात्रा के धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्य को बढ़ाता है।

बुढ़ापे की लाठी मतलब एकमात्र सहारा। हमे तो इस सहारे का अनुभव यमुनोत्री धाम के रस्ते में चढ़ाई के समय हुआ। एक लाठी के सहारे हमने 6ाद्व की चढ़ाई बड़ी आसानी से कर ली। समझ में ये भी आया कि जीवन में लाठी का क्या महत्व है।

चढ़ाई में हमे कुल ढाई घंटे लगे । सुबह 8.30 पर सूर्य कुंड में स्नान करके मां यमुनोत्री के दर्शन सुबह 9 बजे किए।

ऊपर जाकर सूर्य कुंड में स्नान करके मां यमुना के दर्शन कर अद्भुत आनंद की प्राप्ति हुई। मां यमुना के दर्शन कर आरती ले ,वहां से सूर्यकुण्ड में पके हुए चावल और प्रसाद भी लिए । बड़ी ही अद्भुत अनुभूति हुई जिसको बयां नहीं किया जा सकता, सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

ऊपर ही नदी के पास नाश्ता लेकर उतरना शुरू किए तो लगभग 11 बज रहे थे। आराम से रिमझिम बारिश की फुहारों के साथ रुक रुक कर उतरते रहे। दोपहर के 2 बजे हम नीचे उतरे और मस्त वाली चाय पीकर फिर कुछ आगे भोजन करके जैसे ही गाड़ी में बैठे , मौसम विभाग की सूचना आई कि अगले 2 घंटे में बहुत तेज तूफान 40ाद्व/द्धह्न की रफ्तार से आने वाली है। हम काफी आगे बढ़ चुके थे। सच में बहुत तेज बारिश होने लगी । अब तो ओले भी पड़ने लगे। सचिन भैया ने गाड़ी रोकी और कुछ देर हम एक शॉप में रुके रहे। थोड़ी देर बाद जब बारिश बंद हुई तो हम गाड़ी में बैठे। रस्ते में हमे पाइन (चीड़) का एक पेड़ गिरा हुआ मिला। दोनों तरफ के यात्रियों ने उसे ताकत लगाकर किनारे किया। गाड़ी फिर आगे बढ़ी। ऐसे रास्ते में हमे 6 और पाइन ट्री गिरे हुए मिले। हमारी गाड़ी तो आगे बढ़ गई परन्तु बस के लिए मुसीबत खड़ी हो गई। हम आगे बढ़े। ईश्वर की कृपा से किसी भी प्रकार की कोई जान - माल की हानि नहीं हुई । शाम को 6 बजे हम फिर से आर जी रेसीडेंसी पहुंचे।

हुरास का शरबत (लाल रूहोफ्जा जैसे) पिलाकर उन्होंने हमे तरो-ताजा किया। संध्या आरती पूजन कर मैने फलाहार किया आडू,पपीता, और बेसन का चीला गर्मागर्म, सभी खाकर खुश हो गए। रात को किसी ने भोजन नहीं किया। मस्त नींद लिए आराम किए।

जय हो यमुना मैया.

⊙⊙

समाचार

सुकमा –सरस्वती शिशु मंदिर सुकमा कन्या भारती द्वारा 'सखी री सावन मन भायो' कार्यक्रम में रंगोली, राखी सजाओ, कलश सजाओ, मेहंदी सजाओ, प्रतियोगिता कार्यक्रम नगर पालिका उपाध्यक्ष श्रीमती भुनेश्वरी यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ

सारंगढ़–सरस्वती शिशु मंदिर उ. मा. विद्यालय सारंगढ़ जिला – सारंगढ़– बिलाईगढ़ दिनांक 4/8/2025 को सावन सोमवार के उपलक्ष्य में नन्हे मुन्हे भैया–बहन भगवान शिव पार्वती के वेशभुषा मे विद्यालय कॉवर यात्रा शिव मंदिर तक में सम्मिलित हुये। सर्वप्रथम विद्यालय के प्राचार्य एवं वरिष्ठ आचार्य एवं समस्त दीदी आचार्य द्वारा पूजन कर कॉवर यात्रा को विद्यालय से मंदिर तक प्रारंभ किया गया वहॉ जाकर भगवान शिव का पुजा अर्चना की गयी। लौटने के पश्चात् भगवान शिव के भजन भैया बहनों के द्वारा किए गए। जिससे पूरा विद्यालय भक्ति भाव से झूम उठा ।

कोनी –सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति छत्तीसगढ़ प्रांतीय आधारभूत विषय प्रशिक्षण वर्ग संगीत,संस्कृत, नैतिक आध्यात्मिक शिक्षा के उद्घाटन सत्र में आदरणीय डॉ देवनारायण साहू जी प्रांतीय संगठन मंत्री, प्रांतीय अध्यक्ष श्री रतनलाल चक्रधर जी, प्रांतीय सचिव श्री पुरन्दन कश्यप जी द्वारा प्रारंभ हुआ।

देवेन्द्र नगर –प्रांत की योजना से मलखंभ खेल प्रशिक्षण वर्ग देवेन्द्र नगर विद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ के आज उद्घाटन सत्र में उपस्थित श्री जुड़ावन सिंह ठाकुर जी उपाध्यक्ष विद्याभारती

मध्यक्षेत्र, श्री संजय मिश्रा जी अध्यक्ष क्रीड़ा भारती छत्तीसगढ़ प्रांत, डॉ.अशोक त्रिपाठी जी अध्यक्ष,श्री संजय जोशी जी सचिव माधव बाल कल्याण समिति देवेन्द्र नगर विद्यालय रायपुर, श्री बद्रीनाथ केशरवानी जी विभाग प्रभारी, श्री मोहन पवार जी विभाग प्रमुख, रायपुर विभाग, दिवाकर स्वर्णकार प्रांत खेल प्रमुख विद्याभारती छत्तीसगढ़ प्रांत एवं अन्य कार्यकर्ता तथा कांकेर, केशकाल, जगदलपुर, कसेकेरा एवं देवेन्द्र नगर विद्यालय रायपुर के खिलाड़ी भैया–बहिन एवं संरक्षक आचार्य उपस्थित रहे।

विद्यालय के प्राचार्य एवं आचार्य परिवार का सहयोग बहुत ही सराहनीय रहा।

खरोरा –सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरोरा में आज दिनांक 31/07/2025 दिन गुरुवार को गोस्वामी तुलसीदास जी की 528वीं जन्म जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री अश्विनी पाटकर जी के द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । प्राचार्य जी के द्वारा तुलसीदास जी की जीवन की गाथा को भैया –बहनों के समक्ष रखा गया कि किस प्रकार उन्होंने हर कठिनाइयों को पार करके रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना की। गोस्वामी तुलसीदास भक्ति काल के कवि थे । आचार्य श्री तोरण लाल कुर्रे एवं आचार्या श्रीमती सीमा पंसारी

जी के द्वारा अपने उद्बोधन में तुलसीदास जी के आदर्श से भैया- बहनों को प्रेरणा लेने की बातें कहीं। इस कार्यक्रम में कक्षा एकादश एवं द्वादश के भैया-बहनों के द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन परिचय ,दोहा, प्रेरक प्रसंग आदि कार्यक्रम रखा गया जिसमें भै. साहिल देवांगन, बहन दामिनी,डिगेश्वरी निषाद ,सौम्या वर्मा ,सुनैना साहू ,भूमिका साहू ने भाग लिया। बहन कांक्षी धीवर के द्वारा मंच संचालन किया गया। श्रीमती कंचन वर्मा एवं यशवनी निषाद जी के द्वारा कार्यक्रम को संपन्न कराया गया। इस कार्यक्रम के अवसर पर ही भैया -बहनों के द्वारा गुल्लक पूजन किया गया। गुल्लक पूजन बच्चों को धन संचित करने के लिए कराया जाता है।

खड़बतर -सरस्वती शिक्षा केंद्र ग्राम खडबतर संकुल

डौंडीलोहारा आचार्य दीदी देवकुमारी भैया-बहनों के साथ वृक्षारोपण किया गया।

चांपा -सरस्वती शिशु मंदिर चांपा के शिशु वाटिका से

निकली नन्हें बच्चों की कांवर यात्रा चौथा स्तंभ।

चांपा जांजगीर। सरस्वती शिशु मंदिर चांपा में नन्हे भैया बहन ने कांवर यात्रा भोलेनाथ में जलाभिषेक किया। विद्यालय में शिशु वाटिका के तहत अपने संस्कृति परंपरा को अवगत कराते हुए एकता और भाईचारे की भावना के साथ कांवर यात्रा के महत्व और धार्मिक परंपराओं के बारे में सिखाने का प्रयास किया।

इस आयोजन में बच्चे कांवड़ व ध्वज लेकर ''बम बम भोले'' बोल बम ,हर-हर महादेव के बोल विद्यालय में गूंज उठा, विद्यालय परिसर में एक छोटी यात्रा की इस दौरान, उन्हें कांवर यात्रा के बारे मे और पारंपरिक लोकगीत गाने के लिए प्रोत्साहित किया ।

इस कार्यक्रम में प्राचार्य अश्विनी कुमार कश्यप , प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार पाण्डेय ,जिला प्रमुख शिशु वाटिका श्रीमती उषा देवांगन व श्रीमती जय कंसारी , श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती खुशबू कैवर्त, श्रीमती केश्वरी नामदेव, श्रीमती रजनी पाण्डेय, श्री सुनित स्वर्णकार, श्री योगेश, श्रीमती निशु राठौर,श्रीमती संगीता यादव, श्रीमती राखी सिंह, शिव कुमार बरेठ एवं विद्यालय परिवार सहयोग किये।

नवागढ़ -श्रावण मास की अंतिम सोमवार 4 अगस्त 2025 को सरस्वती शिशु मंदिर नवागढ़, जिला- जांजगीर चांपा के भैया- बहनों को नवागढ़ धरा धाम के

पावन पवित्र भगवान लिंगेश्वर महादेव (देव दर्शन) कराया गया।

सरस्वती विहार - रायपुर विभाग का वार्षिक कार्य योजना सरस्वती शिशु मंदिर सरस्वती विहार रायपुर में संपन्न हुई उद्घाटन के अवसर पर माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्रीमान राम

भरोसा सोनी जी का संघ के शताब्दी वर्ष में विद्या भारती की

भूमिका पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ वही प्रादेशिक सचिव जी सम्माननीय लक्ष्मण राव जी मगर के द्वारा विद्यालय की वार्षिक कार्य योजना एवं गुणवत्ता वृद्धि पर विस्तार से कार्य योजना बनी। बैठक के समापन के अवसर पर विद्या भारती छत्तीसगढ़ प्रांत के सम्माननीय संगठन मंत्री जी के द्वारा पंचकर्तव्य आधारभूत विषय एवं विद्यालय की आंतरिक एवं बाह्य सौंदर्य रखरखाव एवं आचार्य की क्षमता दक्षता वृद्धि पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। योजना बैठक में श्रीमान बद्रीनाथ केशरवानी, विभाग के प्रमुख श्रीमान मोहन राव पवार, प्रांत के सह प्रमुख श्रीमान रामकुमार वर्मा एवं विभाग समन्वयक श्रीमान मानिक लाल साहू जी उपस्थित रहकर कार्य योजना बनाने में सहयोग प्रदान किए।

सरिया -आज दिनाँक 04/08/2025 दिन सोमवार को सावन माह की अंतिम सोमवार के उपलक्ष्य में सरसवती शिशु मंदिर उ.मा.विद्यालय सरिया के नन्हे -मुन्ने-भैया-बहनों के द्वारा बोल बम काँवर यात्रा किया गया।जिसमें विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री अरविंद प्रधान जी .ब्यवस्थापक श्री पंचानन दास जी एवं अन्य सदस्य तथा विद्यालय के प्राचार्य श्री अमरदास मानिकपुरी व सभी दीदी जी एवं आचार्य शामिल थे। विद्यालय से अटल चौक एवं गांधी चौक होते हुए रामचंडी मंदिर के शिव मंदिर में जल चढ़ाया गया।मंदिर समिति के द्वारा भैया/ बहनों का स्वागत किया गया तथा प्रसाद वितरण किया गया।

बाराद्वार - सरस्वती शिशु मंदिर बाराद्वार में 2 अगस्त 2025 को भारत माता आरती में नगर पंचायत बाराद्वार के वार्ड नंबर 3 के पार्षद श्रीमती अंजलि साहू एवं पति श्री राजेश साहू जी शामिल हुए।

मनेन्द्रगढ़ - सरस्वती शिशु मंदिर मनेंद्रगढ़ में राखी बनाओ एवं मेहंदी लगाओ प्रतियोगिता आयोजित की गई

आज सरस्वती शिशु मंदिर मनेंद्रगढ़ में किशोर एवं कन्या भारती का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री गोपाल कृष्णा दुबे विकासखंड शिक्षा

अधिकारी श्री नीरज अग्रवाल सरस्वती शिक्षा संस्थान के सह सचिव के विशिष्ट आतिथ्य एवं विद्यालय के व्यवस्थापक

माननीय दिनेश्वर मिश्रा जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

मनेन्द्रगढ़ – सरस्वती शिशु मंदिर झगराखण्ड रोड मनेंद्रगढ़ में श्री तुलसी जयंती पर गीत, भजन एवम् सावन उत्सव का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

आज सरस्वती शिशु मंदिर मनेंद्रगढ़ में संत शिरोमणि तुलसीदास जी की जयंती

मनाई गई जिसमें भैया-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

तरीघाट –सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट के भैया-बहन एवं आचार्य-दीदियां रक्षासूत्र लेकर पुलिस थाना पाटन पहुंचे हमारे देश मे सीमा पर तैनात सैनिक हमारी रक्षा करते है और देश के भीतर पुलिस बल हमारी सुरक्षा करते है। पुलिस बल के जवान कैसे कार्य करते है वह अप्रिय घटनाओ से हमे बचाते है।इन सब बातो को जानने एव प्रत्यक्ष अवलोकन करने के लिए सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट के बच्चे पुलिस थाना पहुचे। बच्चे उत्साहपूर्ण अपनी जिज्ञासा को पुलिस कर्मी से पूछकर,चर्चा करते हुए थाना पाटन का अवलोकन किये। एवं सभी पुलिस कर्मी को रक्षासूत्र बांधकर मिठाई खिलाकर रक्षाबंधन की बधाई दी।विद्यालय पर भी सभी भैया-बहन एक दूसरे को राखी बांधकर बधाई दिये।प्रधानाचार्य देवनारायण साहू द्वारा रक्षाबंधन पर्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी बात कही।बच्चे अपने हाथो से राखी बना कर लाये,इस अवसर पर थाना पाटन के सभी पुलिस जवान, आचार्य-दीदीयां, कक्षा पंचम,षष्ठ, सप्तम के भैया-बहन उपस्थित रहे।

खरोरा – रक्षा सूत्र बांधकर समाज को दिया संदेश

सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरोरा द्वारा संचालित बाबा गुरुघासीदास संस्कार केन्द्र का दर्शन कर, वार्ड वासियों को स्थानीय विद्यालय के बहनों द्वारा रक्षा बंधन के पावन पर्व पर रक्षा सूत्र बांधा गया।

तत् पश्चात् संस्कार केन्द्र संचालक श्री वेदराम मनहरे (प्रतिष्ठित समाज सेवी एवं नशा मुक्ति अभियान के प्रभारी) से सौजन्य भेंट कर उनको भी रक्षा सूत्र बांधकर उनकी कुशल मंगल की कामना की गई।

इसके पूर्व थाना प्रभारी श्री कृष्ण कुमार कुशवाहा जी के द्वारा थाना परिसर में महिला व बालिका शिक्षा ,सुरक्षा के तहत बहनों को महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। वर्तमान समय में समाज में घटने वाली घटनाओं से सचेत रहने एवं अपने कानूनी अधिकारों के बारे में भी जानकारी हो ऐसा मार्गदर्शन किया गया।

थाना खरोरा के समस्त कर्मचारियों को विद्यालय के बहनों द्वारा रक्षा सूत्र बांधा गया। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य श्री अश्वनी पाटकर, श्रीमती दमयंती डडसेना, श्रीमती संतोषी यादव, श्री मनोज ध्रुव, श्री यशवनी कुमार निषाद, कु. चंद्रप्रभा गिलहरे व विद्यालय में अध्ययनरत 30 बहने उपस्थित रहे।

कांकेर –सरस्वती शिशु मंदिर गढ़ पिछवाड़ी कांकेर में श्रावण महीने में छोटे-छोटे भैया बहनों द्वारा छोटा-छोटा मिट्टी का पार्थिव शिवलिंग बनाकर विद्यालय में लाया गया था जिसको सावन माह के अंतिम दिवस में कावड़ यात्रा निकालकर विसर्जन किया गया जिसमें प्राथमिक विभाग की सभी भैया-बहन एवं आचार्य-दीदीयां विद्यालय के प्राचार्य उपस्थित थे। भोलेनाथ

की कृपा सदैव हमारे बच्चों एवं विद्यालय पर बनी रहे यह संकल्प के साथ 'ओम नमः पार्वती पतये हर-हर महादेव' का जयकारा लगाया गया।

घरघोडा - दिनांक 14-8-25 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी

पर्व के उपलक्ष्य में हमारे विद्यालय स शि म उ मा विद्यालय घरघोडा में राधा -कृष्ण रूप सज्जा प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर हमारे विद्यालय के व्यवस्थापक आ. श्री सुनिल सिंह ठाकुर जी सपरिवार शामिल हुए। एवं पालकों - माताओं की उपस्थिति 165 रही। आज के कार्यक्रम में श्री कृष्ण की संख्या 45 एवं राधा के वेश में 54 शिशु भाग लिए। यह प्रतियोगिता कक्षा अरूण से प्रभात एवं प्रथम द्वितीय कक्षा तक के भैया-बहनों के लिए प्रतिवर्ष किया जाता है। अंत में प्रसाद वितरण कर समापन किया गया।

जामुल- सरस्वती शिशु मंदिर जामुल में अखण्ड भारत दिवस मनाया गया । जिसमें मुख्य वक्ता श्री दिलेश्वर जी, सह विभाग कार्यवाह अध्यक्षता श्री नेतराम जी, माननीय सह संघचालक जामुल नगर और संजय शर्मा प्राचार्य सरस्वती शिशु मंदिर जामुल के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ । सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा माँ भारती के छाया चित्र पर पूजा अर्चना कर किया गया । मुख्य वक्ता दिलेश्वर जी ने विस्तार से बताते हुए कहा कि राजनीतिक दृष्टि से अखण्ड बनाने में समय लगेगा और हम सांस्कृतिक दृष्टि से अभी से प्रारम्भ कर प्रयास करेंगे तो बहुत जल्द ही हम अपने अखण्ड स्वरूप को प्राप्त कर सकते है । भारत को अलग-अलग समय मे। कूटनीति प्रयास से तोड़कर आज का स्वरूप को देख रहे है । हमें पांच परिवर्तन पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, स्व का बोध आदि हमे अपने स्वयं जागरूकता लाकर अखंड स्वरूप को प्राप्त करेंगे । अध्यक्षता श्री नेतराम जी ने आशीर्वाद प्रदान किया । इस अवसर पर विद्यालय के भैया-बहन और आचार्य गण उपस्थित रहे ।

सरस्वती शिशु मंदिर जामुल में आज जन्माष्टमी के पावन अवसर पर जन्माष्टमी उत्सव हर्सोउल्लास और दही लूट कार्यक्रम का आयोजन और राधा-कृष्ण सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिसमें भैया -बहन अपने अपने घरों से राधा-कृष्ण बनकर विद्यालय आए और उसके बाद राधा-कृष्ण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले भैया -बहनों को पुरस्कृत किया गया और अन्य भैया-बहनों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया तत्पश्चात विद्यालय के भैया बहनों द्वारा नगर के विभिन्न स्थानों पर जाकर दही लूट किया गया । जिसमें नगर के गणमान्य नागरिक और विद्यालय परिवार उपस्थित रहे ।

खरोरा – सरस्वती शिशु मंदिर में स्वतंत्रता दिवस और

श्री कृष्णा जन्माष्टमी का भव्य कार्यक्रम संपन्न, छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में भाग लिया।

खरोरा। – सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरोरा में स्वतंत्रता दिवस और श्री कृष्णा जन्माष्टमी का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में ध्वजारोहण, दीप प्रज्वलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामाजिक योगदान शामिल थे।

ध्वजारोहण और अतिथियों का स्वागत

कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण के साथ हुई, जिसमें मुख्य अतिथि श्री मोहन राव पवार (रायपुर विभाग प्रमुख) और विशेष अतिथि ईश्वरी प्रसाद देवांगन (भूमि दाता व समाजसेवी), श्री सूरज सोनी (सोने–चांदी व्यापारी व समाजसेवी) और डॉ. गुलाब सिंह टिकरिहा (चिकित्सक, अंकुर हॉस्पिटल) उपस्थित थे। विद्यालय के प्रमुख श्री अश्वनी पाटकर ने भी कार्यक्रम में अपनी उपस्थित रहे।

तत्पश्चात ओम मां सरस्वती और भारत माता के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्राचार्य द्वारा अतिथियों का परिचय और स्वागत किया गया।

सामाजिक योगदान और सांस्कृतिक गतिविधियाँ

इस अवसर पर श्री सूरज सोनी ने विद्यालय के 17 निर्धन छात्रों को विद्यालय गणवेश प्रदान किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जन्मभूमि के प्रति प्रेम और अमर शहीदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना था।

अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें महात्मा गांधी की तरह सत्य की राह पर चलना चाहिए और सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद की तरह देश को भ्रष्टाचार और अन्य सामाजिक बुराइयों से मुक्त करना चाहिए।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन

स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम के बाद श्री कृष्णा जन्माष्टमी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शिशु विभाग के 45 छात्र–छात्राओं ने राधा–कृष्ण वेशभूषा में भाग लिया। विद्यार्थियों ने झांकियों, गीत और नृत्य के माध्यम से भक्ति और सांस्कृतिक प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य ने अतिथियों का उपस्थित होकर सहयोग करने पर आभार व्यक्त किया। इसके बाद 24 छात्रों और उनके अभिभावकों को मिष्ठान वितरित किए गए।

आयोजन की विशेषताएँ

कार्यक्रम में सभी आचार्य और दीदी उपस्थित रहे। संचालन श्रीमती कंचन वर्मा और कक्षा द्वादश की कांक्षी धीवर ने किया। यह आयोजन न केवल बच्चों के सांस्कृतिक विकास के लिए प्रेरणादायक था बल्कि सामाजिक योगदान और देशभक्ति की भावना को भी बढ़ावा देने वाला रहा।

निष्कर्ष

खरोरा के इस विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस और श्री कृष्णा जन्माष्टमी का आयोजन सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत सफल रहा। इससे बच्चों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी और सांस्कृतिक रुचि का संवर्धन हुआ।

लुड़ेग- सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक

विद्यालय -लुड़ेग में आज समस्त सम्माननीय प्रबंधकारिणी समिति एवं सैकड़ों अभिभावकों की उपस्थिति में विद्यालय के भैया-बहनों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, आकर्षक झांकी के साथ पुरे नगर में प्रभातफेरी एवं मटका फोड़ के साथ आकर्षक कार्यक्रम संपन्न हुए।

घरघोड़ा -आज दिनांक 14-8-25 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में हमारे विद्यालय स शि म उ मा

विद्यालय घरघोडा में राधा-कृष्ण रूप सज्जा प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर हमारे विद्यालय के व्यवस्थापक आ. श्री सुनिल सिंह ठाकुर जी सपरिवार शामिल हुए एवं पालकों-माताओं की उपस्थिति 165 रही। आज के कार्यक्रम में श्री कृष्ण की संख्या 45 एवं राधा के वेश में 54 शिशु भाग लिए। यह प्रतियोगिता कक्षा अरूण से प्रभात एवं प्रथम द्वितीय कक्षा तक के भैया-बहनों के लिए प्रतिवर्ष की जाती है। अंत में प्रसाद वितरण कर समापन किया गया।

मस्तूरी- अपने विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मस्तूरी में स्वतंत्रता दिवस की 78 वीं वर्षगांठ के मुख्य अतिथि के रूप में बिलासपुर जिला के जिला पंचायत सदस्य माननीय श्री दामोदर कांत जी की गरिमामय उपस्थिति रही। इस पावन अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता सरस्वती बाल कल्याण समिति/ मस्तूरी के माननीय उपाध्यक्ष श्री राजेंद्र सोनी जी ने की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में समिति के माननीय श्री दिनेश सराफ (सचिव), श्री सरोज राठौर (सह सचिव), श्री बैसाखु प्रसाद सोनी (संस्थापक सदस्य), श्री गोपाल अकेला (सदस्य) आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम प्रारंभ मां सरस्वती के मंदिर में पूजन अर्चन के साथ प्रारंभ हुआ तत्पश्चात् माननीय मुख्य अतिथि महोदय के द्वारा दीप प्रज्वलन व ध्वजारोहण किया गया।

अतिथि गणों का परिचय एवं स्वागत विद्यालय के प्राचार्य संतोष कुमार पाण्डेय ने किया।

तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम की रंगारंग प्रस्तुति ने नवागंतुकों, अभिभावकों, भैया-बहनों तथा उपस्थित समुदाय का मन मोह लिया।

अपने उद्बोधन में माननीय मुख्य अतिथि महोदय जी ने

सरस्वती शिशु मंदिर के अनुशासन और संस्कार की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए मील का पत्थर बताया !

अपने अध्यक्षीय आशीष में माननीय सोनी जी ने भारत के विभाजन की त्रासदी का उल्लेख करते हुए हमें एकजुट रहने की सलाह दी।

समिति के संस्थापक सदस्य श्री बैसाखू सोनी ने वर्तमान वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए भारत की इच्छा शक्ति का उदाहरण देते हुए बताया कि आज हम वैश्विक स्तर पर तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है जो अमेरिका जैसे महा शक्तिशाली देश को भी आंख दिखाने में सक्षम है।

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की वरिष्ठ आचार्य श्रीमती सीमा राठौर द्वारा किया गया द्यसांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती सरोज श्रीवास दीदी के निर्देशन में भैया बहनों का सारा कार्यक्रम सराहनीय रहा।

अंत में कल्याण मंत्र (सर्वे भवन्तु सुखिनः ....)के साथ इस पूरे कार्यक्रम के लिए विद्यालय परिवार की ओर से प्राचार्य ने आभार ज्ञापित किया। अंत में सभी लोगो को प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समापन किया गया। इस पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने में अपने विद्यालय के आचार्य गण श्री रामाधार वस्त्रकर, श्री कृष्ण कुमार यादव, श्रीमती श्रद्धा श्रीवास, श्रीमती वर्षा साहू, श्रीमती सीमा श्रीवास्तव, श्रीमती शीतला साहू, श्री डीगेश्वर श्रीवास, श्री ताराचंद साहू, श्री विजेंद्र यादव, कु खुशी तिवारी, कु शोभा खरे, कु जान्हवी तिवारी, कु प्रीति सिंह, कु प्रतिभा निर्णेजक, श्रीमती आरती यादव, कुमारी आस्था गुप्ता, श्री भाईलाल सोनी आदि की भूमिका महत्वपूर्ण रही ।

!! जय हिन्द !!

तागा– सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तागा में मनाई गई श्री कृष्ण जन्माष्टमी। इस अवसर पर प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी विद्यालय से श्री कृष्ण की दिव्य झांकी निकाली गई जिसमें विद्यालय के सभी भैया–बहन एवं समस्त आचार्य –दीदी जी तथा विद्यालय समिति के समस्त पदाधिकारी के साथ गणमान्य नागरिक जन सम्मिलित हुए विद्यालय से झांकी सभी मोहल्ले से गुजरते कीर्तन मंडली के

साथ निकाली गई जिसमें ग्राम वासियों के द्वारा मटकी का प्रबंध एवं दहीहंडी की व्यवस्था की गई। जिसे श्री कृष्ण के द्वारा अपने माखन चोर मंडली सहित तोड़ते हुए आगे बढ़ झांकी के दौरान माताओ एवं बहनों ने श्री कृष्ण–राधा एवं सुंदर ग्वाल–बाल सहित सभी रूपों का आरती पूजन किया इस अवसर पर ग्रामवासियों में भारी उत्साह एवं उमंग देखा गया झांकी वापस आकर मां मनिका दाई मंदिर परिसर में श्री कृष्ण जी की दिव्य आरती कर विसर्जित की गई एवं प्रसाद वितरण किया गया ।

सरिया– सरस्वती शिशु मंदिर के संचालन समिति सरिया का पुनर्गठन किया गया। जिसमें पहले के समिति को पुनः नवीन कार्यकारिणी समिति के रूप में गठन करने की मांग समिति सदस्यों द्वारा की गई। समिति के मांग पर निर्वाचन समिति के द्वारा पंचानन दास को पुनः व्यवस्थापक के रूप में मनोनीत किया गया। वहीं अरविंद प्रधान अधिवक्ता को सरस्वती शिशु मंदिर सरिया का अध्यक्ष पद का दायित्व सौंपा गया। इसी तरह कार्यकारिणी का भी गठन किया गया। समिति पुनर्गठन अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर विभाग प्रमुख रायगढ़ के लक्ष्मण प्रसाद कटकवार एवं विद्या भारती जिला प्रतिनिधि गणेश यादव के नेतृत्व में गुरुवार को सरस्वती शिशु मंदिर सरिया का पुनर्गठन किया गया। इस मौके पर सर्वप्रथम मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर अतिथियों का तिलक लगाकर सम्मान किया गया। व्यवस्थापक पंचानन दास ने समिति के दो वर्ष के कार्यकाल का प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया । साथ ही पुराने समिति को भंग करने की घोषणा की तत्पश्चात् विभाग

प्रमुख एवं जिला प्रतिनिधि की उपस्थिति में नई समिति का गठन करने की अनुशंसा की। उन्होंने कहा कि यहां सेवा ही सर्वोपरी है। समिति के पदाधिकारी निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हुए विद्यालय में संस्कार, अनुशासन का पालन करते हुए बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं।

कोंडागांव – सावन माह के पावन अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय, कोंडागांव द्वारा एक भव्य कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। यह धार्मिक शोभायात्रा विद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख कृष्णा मंदिर तक पहुँची। आयोजन का नेतृत्व विद्यालय की आयोजन प्रभारी श्रीमती पायल देवांगन ने किया। विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राएं पारंपरिक वेशभूषा में कांवड़ लेकर यात्रा में शामिल हुए। यात्रा के दौरान बच्चे ''बोल बम, बोल बम'' के जयकारे लगाते हुए शिवभक्ति में लीन नजर आए। पूरे जोश और उत्साह के साथ शिव शंकर का गुणगान करते हुए यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से होकर गुज़ी, जिससे पूरे वातावरण में भक्ति की गूंज सुनाई दी। कृष्णा मंदिर पहुँचने पर शिवलिंग का विधिपूर्वक जलाभिषेक किया गया।

इस पावन अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य नागरिक, अभिभावकगण एवं विद्यालय परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की भावना जागृत करना रहा। विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले समस्त शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। यह आयोजन न केवल एक धार्मिक यात्रा रहा, बल्कि बच्चों के लिए एक सांस्कृक्तिक अनुभव भी बन गया, जिसने उनमें शिवभक्ति और समाजिक एकता की भावना को प्रबल किया।

खरोरा –सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरोरा में दिनांक 26 जुलाई दिन शनिवार को आचार्यों के व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से वर्ग प्रमुख सीमा पंसारी एवं सहायक कुमारी डिंपल मानिकपुरी, यशवनी निषाद के द्वारा आचार्य व्यक्तित्व विकास वर्ग क्रमांक 2 रखा गया। वर्ग का शुभारंभकार्यालय प्रमुख मूलशंकर मनहरे के द्वारा दीप प्रज्वलित कर दीप वंदना के साथ हुआ। वर्ग के पहले कालखंड में कुमारी डिंपल मानिकपुरी के द्वारा प्रार्थना एवं गीत अभ्यास कराया गया । द्वितीय कालखंड में तोरण लाल कुरें के द्वारा स्पोकन इंग्लिश का क्लास लिया गया। जिसमें व्याकरण से संबंधित बातों को बताया गया। तृतीय कालखंड में प्राचार्य अश्वनी पाटकर के द्वारा अभिभावक संपर्क की आवश्यकता क्यों है? विषय पर प्रकाश डाला गया। पंच परिवर्तन विषय पर भी प्रकाश डाला गया। चतुर्थ कालखंड में यशवनी निषाद के द्वारा शारीरिक अभ्यास कराया गया। इस वर्ग में 31 आचार्य/दीदियां । उपस्थित थे। आचार्य व्यक्तित्व विकास वर्ग आचार्यों के व्यक्तित्व 1 में विकास के लिए रखा जाता है।

बेमेतरा – सरस्वती शिशु मंदिर बेमेतरा में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीप प्रज्वलित कर माता भोजली को स्थापना की गई थी. जिसका विसर्जन प्राचार्य मालिक राम वर्मा के संरक्षण में एक लक्ष्मी वर्मा तथा तारिणी साहू के नेतृत्व में आज किया गया। इस विसर्जन के अवसर पर सभी कक्षा की बहने एवं भैया ने अपना योगदान दिया तथा देवेंद्र देवांगन के नेतृत्व में घोष दल के बच्चों द्वारा सम्मान पूर्वक माता भोजली का विसर्जन, मित्रोरी नगर के पास स्थित तालाब में किया गया। इस विसर्जन में समस्त आचार्य एवं दीदीयाँ उपस्थित रहीं।

अंबिकापुर– सरस्वती शिशु मंदिर देवीगंज रोड में गुरूवार को तुलसीदास जयंती धूमधाम से मनाई गई। आयोजन में स्कूली बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मुख्य अतिथि डाक्टर खुशबू कुमारी एवं विशिष्ट अतिथि प्रतिमा त्रिपाठी, प्राचार्य मीरा साहू थे। छात्र-छात्राओं ने तुलसीदास के बाल स्वरूप का वर्णन किया, दोहे सुनाएं एवं रामचरितमानस के सातों अध्यायों वर्णन किया। रामचरितमानस की चौपाई भी बच्चों के द्वारा सुनाई गई। डाक्टर खुशबू कुमारी ने बच्चों को तुलसीदास जी की तरह अनुशासन में रहने की बात बताई। प्रतिमा त्रिपाठी ने तुलसीदास की जीवनी पर चर्चा की।

मीरा साहू ने तुलसीदास के दोहे का वर्णन करते हुए बताया कि आपको उस घर में कभी नहीं जाना चाहिए जिसमें आपका सम्मान ना हो क्यों ना वहां धन की वर्षा हो । सुप्रिया सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए तुलसीदास के जीवन प्रसंग पर चर्चा करते हुए उनकी रचनाओं का वर्णन किया।

पत्थलगांव- सरस्वती शिशु मंदिर के छात्रों ने शहर में कांवड़ यात्रा निकाली। इसे लेकर बच्चों में खसा उत्साह देखने को मिला। वहीं नन्हें -मुन्ने बच्चों को कांधे पर कांवर सजाकर शिव मंदिर जाते देख लोग भी भाव विभोर नजर आए।

सरस्वती शिशु मंदिर में संचालित शिशु याटिका के बच्चों ने शुक्रवार को शहर में कांवड़ यात्रा निकाली। श्वत वस्त्रों में सजे बच्चों ने अपने कांधों पर प्लास्टिक के छोटे छोटे कांवड़ उठा रखे थे। वहीं शिव, पार्वती गणेश और शिवगणों के वेश में सुसजित बच्चे सुबह यात्रा को अगुवाई कर रहे थे।

कावड़ यात्रा विद्यालय परिसर से प्रारंभहुई और टेलीफोन एक्सचेंज से होकर इंदिरा चौक का भ्रमण करने के बाद शहर के मध्य में स्थित संथस पुरान सत्यनारायण मंदिर परिसर पहुंची। बच्चों ने कतारबद्ध होकर मंदिर परिसर में स्थित भगवान भोलनाथ के मंदिर में पहुंचकर दर्शन किए और शिवलिंग का जलाभिषेक किया।

सबसे पहले शिव और अन्य देवगणों के वेश में सज्जित बच्चों को दर्शन के लिए ले जाया गया।

इसके बाद सभी बच्चों ने बारी-बारी से मंदिर में दर्शन कर जलाभिषेक किया। फांवड़ यात्रा में वो सुरक्षित रूप से स्कूल से मंदिर और मंदिर परिसर से वापस स्कूल तक लाने में उन्हें अनुशासित बनाए रखने के लिए शिक्षक-शिक्षिकाएँ भी साथ-साथ चल रहे थे यहीं स्कूल के अनुरोध पर पुलिस प्रशासन द्वारा भी चाक चौबंद व्यवस्था की गई थी। संस्था के प्राचार्य संतोष कुमार पट्टी ने बताया कि भारतीय संस्कृति में धार्मिक आस्था का विशेष महत्व है और आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाए रखने के लिए उन्हें शिक्षा में भारतीय संस्कृति से जुड़ी परंपराओं का ज्ञान दिया जाना अति आवश्यक है।

संस्था की शिक्षा की यही विशेषता रही है। श्रावण के महीने में कांवड़ यात्रा भारतीय सनातन संस्कृति का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। इसे ध्यान में रखते हुए इस आयोजन से बच्चे अपनी संस्कृति को समझ सके और उससे जुड़ाव महसुस कर सके स्थानीय लोगों ने भी संस्था की इस पहल की सराहना की है।

खरोरा। सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरोरा द्वारा संचालित माता शकुन देवी संस्कार केंद्र में अध्ययनरत वार्ड क्रमांक 11 के भैया -बहनों को अनिल सोनी (सांसद प्रतिनिधि व पूर्व नगर अध्यक्ष खरोरा) द्वारा अपने जन्म दिवस के अवसर पर अध्ययन व खेलकूद की सामग्री जिसमें फिसल पट्टी पेन कॉपी एवं मिष्ठान सप्रेम प्रदान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभअतिथियों द्वारा सरस्वती माता, ओम, भारत माता के छायाचित्र के पास दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनिल सोनी (सांसद प्रतिनिधि व पूर्व नगर अध्यक्ष खरोरा) विशिष्ट अतिथि चंद्र कुमार डडसेना (प्रांतीय संस्कार केंद्र प्रमुख) पंचराम यादव (वार्ड पार्षद वार्ड क्रमांक 11) अश्वनी पाटकर (प्राचार्य सरस्वती शिशु मंदिर खरोरा) चंद्र कुमार पाटिल रहे। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में केंद्र में अध्ययनरत सभी भैया - बहनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की व उन्हें नियमित केंद्र में आने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री मनोज ध्रुव , व संस्कार केंद्र की दीदी कुमारी संतोष यादव की विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्कार केंद्र प्रमुख श्री यशवनी कुमार निषाद द्वारा किया गया।

जशपुरनगर- सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय की जयंती पर विज्ञान मेला संपत्र हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ में दीप प्रज्वलन विद्यालय समिति के पदाधिकारी देव मोहन प्रसाद सिंह, प्राचार्य संजय कुमार यादव और मुख्य अतिथि विधायक रायमुनी भगत ने किया। मां सरस्वती, ओम, भारत माता के चित्रों के समक्ष

दीप जलाए गए।

अतिथियों का तिलक-चंदन से स्वागत हुआ। इसके बाद सभा कक्ष में भैया-बहनों ने विज्ञान नाटिका, प्रयोग और आचार्य राय पर भाषण प्रस्तुत किया। विधायक रायमुनी भगत ने विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, शिक्षा के साथ संस्कार भी जरूरी हैं। संस्कारयुक्त विद्यार्थी ही विकसित भारत का निर्माण करेंगे। उन्होंने कहा, अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा में विषय ज्ञान पर जोर होता है, संस्कारों पर नहीं। प्राचार्य संजय यादव ने कहा, भारत की विज्ञान परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है। भारत ने जीव विज्ञान, रसायन और भौतिक विज्ञान में श्रेष्ठता सिद्ध की है। आचार्य राजेंद्र कुमार साहू ने अतिथियों का आभार जताया। विज्ञान मेले में चार वर्षों में प्रतियोगिताएं हुई शिशु, बाल, किशोर और तरुण। विज्ञान प्रदर्श, चार्ट, चित्रकला, रंगोली, पौधरोपण, स्वरचित कविता, तात्कालिक भाषण और विज्ञान प्रश्न मंच जैसे कार्यक्रम हुए। %प्रकृति का वरदान थीम पर 147 औषधीय पौधों को प्रदर्शनी लगाई गई। यह मेले का मुख्य आकर्षण रहा। मुख्य अतिथि, विद्यालय समिति के पदाधिकारी, आचार्य बंधु-भगिनी और सभी भैया-बहनों ने सभी प्रतियोगिताओं का अवलोकन किया। विज्ञान मेले का आयोजन विद्यालय परिवार और विज्ञान परिषद के सहयोग से सफल हुआ। कुल 407 भैया-बहनों ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

प्रतापपुर-भगवान शंकर की आराधना के पवित्र महीने में शिव मंदिरों में भक्तों की भीड़ है, नदी संख्या में कांवरिए दिखाई दे रहे हैं। अब सरस्वती शिशु मंदिर प्रतापपुर के बच्चों ने भी कांवर उठाई और शिवपुर में जलाभिषेक किया। आचार्य स्कूल के बालकृष्ण रवि ने जानकारी देते हुए बताया कि इस स्कूल में बदन वाले बच्चे कम उम्र तथा विभिन्न कारणों से बाबाधाम कांवर लेकर नहीं जा पाते हैं। उनकी इच्छा शिवपुर जाने की थी, समिति की सहमति के बाद आज बच्चों ने नगर के पक्की तालाब से जल उठाया और कांवर लेकर शिवपुर तक गए। यहां उन्होंने जलाभिषेक के साथ पूजा अर्चना की और सभी की खुशहाली तरक्की की कामना की। इस दौरान बच्चों में उत्साह था और रास्ते भर बोल बम का जयघोष करते रहे।

सरभोका- सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका नागपुर में श्रावण मास के अंतिम मोमवार को पावन कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम विद्यालय में मनाया जाता है विद्यालय प्रांगण में महादेव का शिव मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सन् 2023 में किया गया तब से विद्यालय का यह नियम है कि ग्राम सेंधा नागपुर स्थित शिव मंदिर के पास जो 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है बांध से जल को कांवर में भरकर विद्यालय के भैया बहन लाते हैं तथा शिव जी का जलाभिषेक करते हैं कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य अर्चना सरकार, वरिष्ठ आचार्य भूपण दास वैष्णव, सावित्री पैकरा, कृष्ण प्रजापति, श्रद्धा सोनी, नीतू, रामेश्वर, प्रतीक्षा, शुभम, काजल तथा सभी अन्य आचार्य के सहयोग से कार्यक्रम शुरू और व्यवस्थित संपन्न कराया गया जिसमें विद्यालय के कक्षा 9वीं से 12वीं के भैया बहन उपस्थित थे सभी ने मंदिर में जलाभिषेक किया तथा विद्यालय के विकास के लिए प्रार्थना किया साथ ही महामृत्युंजय पाठ का भी उच्चारण किया गया।

डोंगरगढ़ – सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्य. विद्यालय में नागार्जुन विज्ञान परिषद का गठन किया गया। प्राचार्य प्रकाश के यादव मार्गदर्शन एवं विज्ञान तथा गणित विभाग के आचार्य दीदियों द्वारा परिषद का गठन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ आचार्य थैलेश साहू, वोधन भारद्वाज, विज्ञान विभाग संरक्षक विनोद ताम्रकार, विज्ञान प्रमुख विशेष साहू, रसायन विभाग प्रमुख अमित शुक्ला, भौतिक विभाग प्रमुख सौरव फूले, कृषि विभाग प्रमुख प्रदीप सिंहा, हाई स्कूल विज्ञान प्रमुख नरेश सिंहा, गणित प्रमुख ओम प्रकाश महोबिया, मिडिल स्कूल विज्ञान प्रमुख स्मृति पांडे, रेवती वर्मा, कौशल्या वर्मा, झुंपा मंडल, कीर्ति दफेदार, मोनिका वाकले एवं सभी आचार्य एवं दीदियां, अध्यक्ष आकाश महोविया, उपाध्यक्ष नागेश्वर साहू, वहन चंचल वर्मा, सचिव प्राची देवांगन, उप सचिव राशि सिंहा, विवेक ताम्रकार, संरक्षक शिवम सिंहा, खुशी वर्मा, सुहानी चेलक, झलक देवांगन के साथ सदस्य उपस्थित रहें।

⊙⊙

विद्याभारती छत्तीसगढ़ प्रांत
प्रांतीय खेल प्रतियोगिता (मार्शल आर्ट) डोंगरगढ़ 2025
(जूडो/कुरास/ताइक्वांडो/कराते)

विद्याभारती छत्तीसगढ़ प्रांत की योजना से प्रांतीय खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन 10 अगस्त को शाम 7.00 बजे क्षेत्र के वरिष्ठ राष्ट्रीय खिलाड़ी श्री अजय राणा जी, श्री नीलम चोपड़ा जी व्यवस्थापक, श्री प्रकाश जी गिरधर कोषाध्यक्ष श्री ठाकुर राम जी कुर्रे उपाध्यक्ष, ग्रामीण शिक्षा छत्तीसगढ़ प्रांत एवं खेल पर्यवेक्षक प्रांतीय खेल प्रतियोगिता, दिवाकर स्वर्णकार प्रांतीय खेल संयोजक, दीपक यादव जी विभाग समन्वयक राजनांदगांव विभाग की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन कर प्रतियोगिता का उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रतियोगिता वृत वाचन प्रांतीय खेल संयोजक के द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में कोरबा, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, सरगुजा एवं राजिम विभाग के 132 भैया 68 बहिन खिलाड़ी एवं 17 संरक्षक आचार्य बंधु -भगिनी,16 खेल निर्णायकों के उत्तम सहयोग से प्रतियोगिता प्रभारी परिचय मिश्रा जी एवं सह प्रभारी नरोत्तम पटेल जी के कुशल नेतृत्व में प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

खेल प्रतियोगिता समापन सत्र में श्री रमन डोंगरे जी प्रथम नागरिक (अध्यक्ष),श्री उमा महेश वर्मा जी उपाध्यक्ष ,नगर पालिका परिषद डोंगरगढ़, श्री राम जी भारती पूर्व विधायक, श्री जागेश्वर निषाद जी, मान.खण्ड संघचालक एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण कर आगे स्तर की क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता की सूचना जानकारी देकर आभार ज्ञापित एवं प्रतियोगिता समापन की घोषणा प्राचार्य श्री प्रकाश यादव जी द्वारा किया गया।शांति मंत्र पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ। प्रतियोगिता में श्री डीकेश जी एवं सौरभ जी के साथ पूरे आचार्य परिवार का उल्लेखनीय सहयोग रहा। पुरस्कार वितरण का संचालन दीपक यादव जी एवं कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन विद्यालय के खिलाड़ी भैया ऋषभ वाल्दे ने किया।

प्रतियोगिता के निर्विघ्न एवं सफलता पूर्वक संचालन तथा सहयोग प्रदान करने हेतु विद्यालय समिति एवं आचार्य परिवार का सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ की ओर से पुनः सहयोग की अपेक्षा के साथ धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, सितम्बर 2025, दूरभाष - 0771-2262770

विविध कार्यक्रम

सरस्वती शिक्षा केन्द्र जाताबाड़ा (कांकेर)

सरस्वती शिक्षा केन्द्र डूमरडीह (खैरागढ़)

सरस्वती शिक्षा केन्द्र मुढ़ीपार (खैरागढ़)

सरस्वती शिशु मंदिर नगोई

सरस्वती शिशु मंदिर पत्थलगाँव

सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट (पाटन)।

सरस्वती शिशु मंदिर कांकेर

सरस्वती शिशु मंदिर गीदम (दंतेवाड़ा)

सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका

विविध कार्यक्रम

सरस्वती ग्राम शिक्षा समिति कोनी बिलासपुर प्रांतीय आधारभूत विषय प्रशिक्षण

सरस्वती शिशु मंदिर सुन्दरकेरा (रायपुर)

सरस्वती शिशु मंदिर देवेन्द्र नगर, रायपुर   सरस्वती शिशु मंदिर मस्तुरी

सरस्वती शिशु मंदिर बगीचा (जशपुर)

सरस्वती शिशु मंदिर प्रतापपुर (सूरजपुर)

सरस्वती शिशु मंदिर लोरमी

प्रेषक:
सरस्वती शिक्षा संस्थान
आयुर्वेदिक कॉलेज के पीछे, रोहिणीपुरम,
रायपुर (छ.ग.) पिन- 492 010 फोन - 0771-2262770

प्रति, ______________________
____
____

पिन. | | | | | |

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक विवेक सक्सेना सचिव सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर आयुर्वेदिक कालेज के पीछे 492010 छत्तीसगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं स्वास्तिक प्रिंटरी हनुमान मंदिर रोड, पवार सभा भवन के पास, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर मो. - 9826446695 से मुद्रित सरस्वती शिक्षा संस्थान रायपुर से प्रकाशित, संपादक - श्री उदय रावले, सितम्बर 2025, दूरभाष - 0771-2262770